مجمع الاشعار

સલાસલ[illegible]ર

حصه سیوم

યાને

મજમઉલ અશઆર.

ભાગત્રીજો. ૩

સરવે શોકીન વાંચનારાઓને સારૂ
ઉરદૂ ઉપરથી સારીરીતે સુધારીને
તેના અખલાગ કરીને ગુજરાતીહરફે
છપાવીને શેઠ કરીમજી મૂસાજીએ
પોતાના હૈદરી છાપખાનામાં છાપી
પ્રસિધ્ધ કર્યો.

મુકામ મુંબઈ.
સન ૧૨૯૯ હિજરી.
સંવત ૧૯૩૮ ના વિક્રમાજીત.
સને ૧૮૮૨ ઈસ્વી.

१५७

रदीईया.

ग़ज़ले ईदीह·२५३

क्या ख़ते मुबारकमें सफ़ाई नज़र आई ;
नक़्शेमें मोहम्मदके खुदाई नज़र आई·
अलराक़ी बयानिबमें सुरैयासे सराहत ;
उस बरज़ख़े कुबराकी ज़आई नज़र आई·
जब हाल निकल वस्ल हुवा, तबतो खुली आंख ;
इस चश्मके परदेमें, खुदाई नज़र आई·
आलमको दिखा हज़रते, आलमने पुकारे ;
उस नूरे इलाहीकी, दोहाई नज़र आई·
कूचेपे सितमगरके, क्या लाशे पडे हैं ;
इस दहरकी मालूम यकाई नज़र आई·
उस सरवे रवां पासपे नित अबरे रवां देख ;
उम्मीद दो आलमकी, बर आई नज़र आई·

એ જાને ફ઼કીર જાકે ક઼દમબોસ લએઅંદર ;
વોહ ઝ઼ાત અજબ ફ઼ેરે હુમાઈ નઝ઼ર આઈ·

ગ઼ઝ઼લે ફ઼કીર ૨૯૪

જબ ઉસગુલે કાફ઼િરકી, સવારી નઝ઼ર આઈ ;
આશિક઼કી વહી અજ઼લ, સિપારી નઝ઼ર આઈ·
રોનેસે મેરા સબ્ઝ઼ હુવા, બાગ઼ે ખ઼િલાયત ;
ચશ્મોંકી ઘટા અબ્રે, બહારી નઝ઼ર આઈ·
આનેસે સ઼નમ મજ઼લિસે, રિંદામેં હુવા કૈફ઼ ;
આંખોમેં તેરે મયકી, ખ઼ુમારી નઝ઼ર આઈ·
દુન્યાસે ગયા ગોરમેં, તોભી નપડા ચૈન ;
કુછ ઝ઼ેરે ઝ઼મીભી, ન ક઼રારી નઝ઼ર આઈ·
હર સફ઼હએ ગુલઝ઼ારપે, નઝ઼રેસે સ઼નમકે ;
બિલ્લાહકે અજ઼બ નક઼્શોને, ગારી નઝ઼ર આઈ·
આશિકકો બિઠા ક઼ત્લકિયા, એક નિગાહસે ;
ક્યા ખ઼ૂબ તેરી ઝ઼ુલ્ફ઼, ગુઝ઼ારી નઝ઼ર આઈ·
કુલ પાર ફ઼કીર હોવે, તેરે ઝ઼ુલ્ફ઼સે ઝ઼ાલિમ ;
તુઝ હિજરકી સીનેમેં કટારી નઝ઼ર આઈ·

ગ઼ઝ઼લે નિયાઝ઼ ૨૯૫

દિખલાએ દાગ઼ે દિલને, ગુલિસ્તાં નએ નએ ;
વહ્શત દિખા રહીહયૂ, બયાંબાં નએ નએ·

मेरे नालोंसे मुझको ऐसाही बयाबांयो ;
पैदा हुवेहैं जिनके, जाहां नये नये.
देरो हरममें कोई नहीं, तेरी राहपर ;
फ़क़ीर नये नये हैं, मुसल्मां नये नये.
मैं किस तरह जुनूं, तेरे हाथोंसे तंग हूं ;
लाये कहांसे रोज़ गिरेबां नये नये.
किस तरह हो गुज़र दिले, जानांपे ऐ नियाज़ ;
दरबा नये नये हैं, निगहबां नये नये.

ग़ज़ले आफ़िल. २९.

तेरी उल्फ़तमें हुये जिनके, जाहां कितने
तिश्नये खूंहैं मेरे गमसे मुसल्मां कितने.
एक उम्मीदली तुझसे, न जर आये मेरी ;
रहगये दिलमें मेरे, हसरतो अरमां कितने.
नहीं मिलता तेरे नाके कापता ऐ लैली ;
छानमारे तेरे मजनूंने, बयाबां कितने.
कितनोंको जिनके जालोंसे, मुकाया तो वही ;
भूले पैमांके पडे पेचमें, जानां कितने.
जिसने देखा तेरी तस्वीर, केहा सूरतने जुदा ;
पडते सवाल हैं आआके, मुसल्मां कितने.
एकथा आयनापोश, जिसके हैं हैरां कितने ;

फिरतेहैं तुझे परेशांके, परेशां कितने
छोड़के सहरासे चला, शहरकी जानिब बजमें ;
लिपटे दामनसे मेरे, ख़ारे मुग़ीलां कितने.
मुसहफ़ी रूमें खिंची जातीहै, उसकी तस्वीर ;
एक कुरआंसे लिखे जातेहैं, कुरआं कितने.
कोई समझा न तेरे शेअरका रुत्बा आक़िल ;
यूंतो हैं कहनेको दुन्यामें, सुख़न्दां कितने.

ग़ज़ले वली. २८७

जिसे इश्क़का तीर, कारी लगे ;
उसे ज़िंदगी जगमें, भारी लगे.
न होवे उसे जगमें, हरगिज़ क़रार ;
जिसे यारे जानीसे, यारी लगे.
न छोड़े मुहब्बत, दमे मरग तक ;
जिसे इश्क़की, बे करारी लगे.
ली हरदम मुझे, आशिके पाकको ;
प्यारे तेरी ज़ात, प्यारी लगे.
अगर तू वलीके, सुख़नको सुने ;
रक़ीबोंके दिलमें, कटारी लगे.

ग़ज़ले वफ़ा. २८८

लौहे जिगरपे नक़्शहै, नामे मोहम्मदी ;

रोज़े अज़लसे हमहैं, गुलामे मोहम्मदी.
हरगिज़ क्युं न कसरे, कूलकसे जलंदहो ;
मौजूंहै चरखे रफ़अते, बामे मोहम्मदी.
क़ूंदेतो कैसे मुरदेदली, उठतेथे गोरसे;
सुन्नेको गोरी दिलसे, कलामे मोहम्मदी.
चरखे चाहारुम छेनका, मकां उनका लामकां;
ऐसासे है बलंद, मकामे मोहम्मदी.
है आरजूमे जंदमे, आशक़ चहा यही;
या रब बनादे मुझको, गुलामे मोहम्मदी.

ग़ज़ले लतीई. २५५

दाग़ हिजरांका न जायेगा, कभू दिलसे मेरे ;
यह निशानीतो मिलीहै, मुझे क़ातिलसे मेरे.
चरखे उस रूए निगहका, नज़ांसे हो कभू;
हाल सैय्यादका पूछो, दिले बिस्मिलसे मेरे.
हाल क्या पूछतेहो, हिजरकी बीमारीका ;
ज़ाहेर आसारतोहै यारो, शमायेलसे मेरे.
शबको ताबीज़पे उसके, जो किया दस्तदराज़
बोला चल दूरहो, क्याकाम हमायलसे मेरे.
चंद हरचंदके मैं दामने, जैली पकडूं ;
हाथितो दूर हमेशां रहे, महमिलसे मेरे.

क़त्ल तो उस्ने किया मुझको, पतशाही रनकी;
खिलती कोताही कुछ साहबे, क़ातिलसे मेरे·
आग लगजाये न दुन्यामें, मुझे डर हय जलती है;
आह सोज़ां जो निकलती है, जहां दिलसे मेरे·

ग़ज़ल· ३००

ऐ सिकंदर हमपे जा, तपानी हय;
मूझे सरतकली, सरगिरानी हय·
मेरे ज़ख्मोंपे मलरखो मरहम
मेरे क़ातिलकी येह निशानी हय·
तलवे छिदछिदके होगये गिरबाल;
हमने सहराकी ख़ाक छानी हय·
हाले दिल पूछलो तबीबोंसे;
क्यूं मेरा रंग ज़ाफ़रानी हय·
याकिये ज़ख्मेदिल हरे होजायें;
पेहनी पोशाक उस्ने धानी हय·

ग़ज़ल शाही· ३०१

कहो उस बर्क़ वशसे, आज आलम साथ जाना हय;
जनाज़ेपर हमारे अब्रे रहमत, शामियाना हय·
चलूंगा सरके बलरौंद़ राहाहत दस्तगीरीमें;
जहां तलवार चलती हय, उसी कूचेमें जाना हय·

लिया जिस्ने हमारा नाम, मारा जे गुनह उस्को ;
निशां जिस्ने बताया है, वोह तीरों का निशाना हय.
नेशर माशो तो प्यारे छोड दूं, मिज्गां के खिचनको ;
तुम्हारे जैन वाअदे पर, हमें आंखें बिछाना हय.
गिरे जो झाड के दस्ते जुनूं से, कब कुछ फुरसत ;
अलीतो दामने सहरा के भी, पुरजे उडाना हय.
जे जाल उस्के उलजते हैं तो, दिल मेरा उलजता हय ;
यहां है दरद शानेमें, वहां जुल्फोंमें शाना हय.
जिसाले नक्शे पा आशो, पडे रहते हैं सरये कब ;
मगर जालिम तेरा गंजे शहीदे आस्ताना हय.

गजले जौकशिशी - ३०२

तासीर तेरे इश्क़ने, मुजपर बरीन की ;
मैं क्या कहूं नसीबने, कुछ या यरी नकी.
दिलबर समझके दिल्को दिया, उस्के हाथमें ;
दिल लेगया मेरा, पेरी कुछ दिलबरी नकी.
जै शके पुस्तरी तेरी खूबीके सामने ;
मुश्तरीने भी बरासी, कुछ हमसरी नकी.
नबरीकयों के पोंहचे सिकंदर लबे हयात ;
जै खिजर यहां तलक, लाला क्युं रहबरी नकी.
जौकशिशीके पास गोहर, दिलथा मिसालमें ;

ज़ीमल कुछ उसकी तूने तो, ऐ ज़ैहरी न की·

ग़ज़ले तमन्ना ३०४

ख़याल आला हय् सेज़ गुल्की, जिछाउं मैं सिम्अरके नीचे;
पयोरी यह हय् युल रंगे, गुल अरंगे ज़ार उसके परके नीचे·
यही है तसकीन यक्ते आख़िरपें, तेरे बीमारो नातवांके;
के संग तेरे है आस्तां का, ज़ज़ बे बालीन सरके नीचे·
चमक रहा था ज़ज़ पे जिस्के, असर का कुतरा वो ख़स्त रहसे;
सितारा जैसे हो जगमगाता इनके ऊपर कमरके नीचे·
चमनमें तायर यह ज़ेरे, मस्तीसे येह चहाते हैं हम गुल्के;
ज़पेरे गुलको देख सेथंतो, रखें मिन्कार परके नीचे·
निगाहे पूर ज़ अली आईत के लगे, जरह उसे हाथ नारिम;
ज़ेकरके दुश्मनपे ध्यान गुज़रे तो, आके ठहरे कमरके नीचे·
यहां वोः कोठे पे ज़ब कातिल तो, सब पुकारी यहां कीजिन्तु;
के तेरी देहशतसे फुरली निकले, छिपाओ मुंहको सिपरके नीचे·
यही तमन्ना है मुद्दतोंसे ज़नाजे बारीपे अपनी आसी
के देह्न अपना ज़नारपें हाथे, असीकी दीवारो दरके नीचे·

ग़ज़ले छनरीआ· ३०५

आतीथी अके हूर, मुझे देख हरगई;
दांतोंके जीयहाज, ज़बां अर पलरगई·
आहरको मेरी पाके वोह, योजरसे हरगई·

जरपर वोह पड़ीयाके, लपकेसे चिमट गये·
की छेड़ छाड़ मैंने तो माकूलसी उसे ;
बे इख़्तियार शर्मके मारे सिमट गये·
कम बख़्त क्या हुया खलल, अंदाज़ येह छुरी ;
हय हय छुरीसे सुन्हकी, छातीन ईरगये·
छिनशाकी गुल्लगूयेह, दुयांधार है ग़ज़ब ;
आकर जहार जिस्के, गलेसे लिपट गये·

ग़ज़ले सौदा-३०६

गर तुझमें है वफ़ा तो, जफ़ाकार कौन हय ;
दिलदार तु हुया तो, दिल आज़ार कौन हय·
नासाह मुद्दतोंसे, तेरे साथके तले ;
पूछा न येह कभू पसे, दीदार कौन हय·
हर शाख शराब ख़ारो, हर अबरे दिन सियाह मस्त ;
आखिर तो तुझ्‌सा पर, हुश्यार कौन हय·
सौदाको तुझमें इश्कसे करते हैं आज क़त्ल ;
पेहचानता हय तू येह गुनहगार कौन हय·

ग़ज़ले सौदा-३०७

सायनके बादलोंकी तरहसे भरे हुये ;
येह वोह नयन हैं जिस्से के, जंगल हरे हुये·
अय दिल येह किस्से बिगड़ीके, आती है फ़ौजे अश्क ;

लख़्ते जिगरकी लाशोंको, आगे धरे हुवे·
पलकें तेरी कहां जसई आरा हुवेके यहां ;
अईयारे कहेरहके, नजरहम पेरे हुवे·
आंखोंको तेरी क्युंके, मैं बांधूंके यह गिलास ;
जलते हैं मेरे दिलकी, जराअत घेरे हुवे·
जूंदोंकी जमघरोंसे यह, लरते हैं यक दिगर ;
लडके मुझ आंसुओंके, जिपर मजगरे हुवे·
छिनसाई अपना सोंच्ये, किसको जखुब खुदा ;
मुनसिई जे बोलते हैं, सो तुझसे डरे हुवे·
नजदीक अपने रहनेसे, मतकर हमें तु मन्अ ;
हैं लाखकोस जब, तेरे दिलसे परे हुवे·
मजलीसमें छोकरोंकी, जो हुजरेसे **शैखजी**
आओतो फिर खुदाने कहा, मसखरे हुवे·
सोदा निकलन घरसेके अब तुझको दूंढते ;
लडके खडे हैं पथरोंसे, दामनतरे हुवे·

गजले आसिई ३०८

यह अश्क चश्मोंमे अब, जमरह रहे न रहे ;
हुःबाब बहरमें कोहे, दमरहे रहे न रहे·
तु अपनी शोखये, जैसो जराइसे मत गुजरे ;
तेरी बलासे मेरा दम, रहे रहे न रहे·

क़मरको होताहै हरमाहमें कमालो ज़वाल;
तेरे भी हुस्नका आलम, रहे रहे न रहे.
ग़रूर है मुंहपे तेरे, ख़ुश्नुमा सनम लेकिन;
हमेशा गुलपे यह शबनम, रहे रहे न रहे.
शिताब आके तेरी दीद, कुछ मोयस्सर हो;
यह दम लबोंपे है, अबथम रहे रहे न रहे.
जो वस्लमें हो जुदाई तो, क्याकरे आसिफ़;
यह दिल्लगी का है बाहम, रहे रहे न रहे.

ग़ज़ले आबरू. ३०९

तुम्हारा दिल अगर हमसे फिरा हय;
तो बेहतर है, हमाराभी ख़ुदा हय.
हमारी कुछ नहीं तक़सीर लेकिन;
कहो हमने तुम्हारा क्या किया हय.
हुए हो ग़ैरक़दर, बेज़ार हमसे;
सभी तुमको कहेंगे, बेवफ़ा हय.
वोह अहमक़ है, कहा है जिसने तुमसे;
मिलो जिस्से तुम्हारा, दिल मिला हय.
अबस बेदिल करो मत, आबरूको;
मुसाफ़िर है शिकस्ता हय गदा हय.

ग़ज़ले आशिकाना ३१०

सांस आकर जिगरमें अडती हय ;
रोइस जब तेरी, याद पडती हय ·
यहां हम मोरे जाते, क्युंके भला ;
क्या बुरी तरह आंख लडती हय ·
पेयमें जाके हम गरीबोंको ;
बुल्ई किस किस तरह अकडती हय ·
तुमको जने दूं क्युंके जाना खराब ;
दिलकी बस्ती मेरी उजडती हय ·

ग़ज़ले दिलबर ३११

मरता हूं तेरे घेस्कूमे, सरशार खबरसे ;
दुड मेरे दिल जरकी, ओ यार खबरसे ·
ओ याद तुही जाके जरा शूखसे केहना
मरता है कोई जपसे, दीयार खबरसे ·
अल्लाह ही बचाये मुझे आतशी गमसे ;
या तुही मेहर खाके, मेरे यार खबरसे ·
किस तरह लुभाया है, मेरे दिलको तूये उआर ;
मरता है तेरा तालिबे, दीदार खबरसे ·
कुचेमें तेरे आनेकी, ताकत नहीं ओ यार ;
मरता है पडा बस्तरे, बीमार खबरसे ·

यह हाल मेरा देखके, हैरां है तबीबां;
जचता है कुछी इश्क़का, बीमार ज़बरसे.
ऐ नाज़नीं ने नाज़, उठाले तेरे दिलबर;
पूछेंगे सखी इयओ, जाकर ज़बरसे.

ग़ज़ले ताजां ३१२

इश्क़ क्या शै है किसी, कामिलसे पूछा चाहिये;
किस तरह जलता है दिल, जे दिलसे पूछा चाहिये.
क्या लड़ाईनेमें मज़ा है, क़त्लहो प्यारेके हाथ;
उसकी लज़्ज़तको किसी, बिस्मिलसे पूछा चाहिये.
जिसने उसका ज़ख़्म खाया, वो उसे मालूम हय;
तेग़ अबरूकी सिफ़त, घायलसे पूछा चाहिये.
यारके मिलनेकी हमको, कोई तरह आती नहीं;
तरह मिलनेकी किसी, वासिलसे पूछा चाहिये.
आहोनालेकी हक़ीक़त देखता हूं हिज्रमें;
क्या गुज़रती होगी ताजां दिलसे पूछा चाहिये.

ग़ज़ले सौदा ३१३

जुबीने रुख़सारे ख़ूबां, गुलसे पूछा चाहिये;
इज़्तिराबे आशिक़ां, बुलबुलसे पूछा चाहिये.
ले गुज़रती है हमारे हालपर, जुल्फ़ोंको देख;
उसकी माहियतके तईं, सुम्बुलसे पूछा चाहिये.

ज़ंहदसे जूजां जलै है, जाहद नौशोंके उपर ;
जो खुदीकी जात जो, कामिलसे पूछा चाहिये·
अहले कशमीरी सकाहां, ऐश करते हैं मुदाम ;
हिंदकी जन्नतके लर्ग, काबुलसे पूछा चाहिये·
लोग कहते हैं मजनुं जैर हल सोदा हुवा ;
कुछ खेलान ईस मरजका, काकुलसे पूछा चाहिये·

ग़ज़ले क़िस्मत·३१४

गर योह जुते काफ़िर शबे, महजामपर आवे ;
एक माह दोदम माहे, फलकको नजर आवे·
मिजगां तेरी जिस दिनसे, मेरे दिलमें खुभी हय ;
ना सुफलह न देखा कोई, जख्मे जगर आवे·
मकदूर है किसका जो, तेरे हुक्मको टाले ;
रुस्तम भी न आवे तो वहीं, उसका सर आवे·
तू अरससे ज़ाजर, जहां जल्वनुमा हो ;
खुरशीद फलकपरसे के, नीचे उतर आवे·
जूं माह मुनव्वर हो, शबे तार हमारी ;
क़िस्मत योह अगर चांदसी सूरत नज़र आवे·

ग़ज़ले सिराज·३१५

ख़बरे तहैयुरे इश्क़ सुन, न जुनूं रहा न परी रही ;
न तो तू रहा न तो मैं रहा, जो रही सो बेख़बरी रही·

शहे बेख़ुदीने अता किया मुझे, अब लीबासे बरहनगी;
न ख़िरदकी बख़ीयह गरी रही न, जुनुंकी परदह दरी रही·
चली सिम्ते ग़ैबसे अेक हवा के चमन ज़ुहूरका जल गया;
मगर अेक शाख़े नेहाले ग़म, जसे दिल कहें सो हरी रही·
नज़रे तग़ाफ़ुले यारका गिलह, किस ज़बांसे बयां करूं;
के शराबे सद क़दह आरज़ू ख़ुमे, दिलमेंथी सो भरी रही·
वो अजब घड़ीथी के जिस घड़ी लिया दरस नुस्ख़ए इश्क़का;
के किताब अक़्लकी ताक़में, जो धरीथी युंही धरी रही·
तेरे जोशे हैरते हुस्नका असर, इस्क़दरसे यहां हुवा;
न तो आयनेमें जला रही, न परीमें जल्वहगरी रही·
किया ख़ाक आतशे इश्क़ने दिले बेनवाए सिराजके;
न ख़तर रहा न हज़र रहा, जो रही सो बेख़तरी रही·

ग़ज़ले कुदरत·३१६

हम सहरासे चमन, हमसे चमन छूटे हय;
हाय अेशामें ग़रीबांके, वतन छूटे हय·
ग़मज़ये ख़ूबसे दिल देके, मैं अेसा भागा;
जैसे सैयादके हाथोंसे, हरन छूटे हय·
अब लबक तेरे शाहीदोंके, ख़ुने हर मूसे;
साफ़ फ़व्वार अेफूं नेरे, कफ़न छूटे हय·
राजे दिलबरांकी मुसीबतमें, लिखूं क्या कुदरत;

तनसे जां निकले है, और जानसे तन छूटे हय.

ग़ज़ले कलंदर ३१७

बे नसीबीपे ऐ दिल, अपने अबस रोता हय;
जो लिखा कातिबे कुदरतने, वही होता हय.
सईरे मुल्के अदम तुझको है, आख़िर दरपेश;
आज ग़फ़लतसे तू बेदार हो, क्या सोता हय.
नहीं मुमकिन के मुग़ीलानसे, होवे पैदा.
फलली जाता है वोही, जो कोई कुछ बोता हय.
करले कुछ काम ग़नीमत है येः अय्याममे ख़याल;
आक़यो लज़्ज़तमें क्युं, उम्रको तू खोता हय.
ग़मकी पेचीशसे कलंदर तू, न कर फ़िक्रो तंग;
फ़िक्रका दाम बला जैसा ही, कुछ होता हय.

ग़ज़ले रिंद ३१८

कुलजे हम यारकी, शमशीर तले बैठ गये;
वोः ब्होत रासरहे, हम नरले बैठ गये.
हम उठे यारके दरपरसे, चले सौ सौ बार.
सैद मजरूहके, मानिंद चले बैठ गये.
गुलशने दहरमे दोरोज़, अबस आनके हम;
सरूकी तरह न इले न इले, बैठ गये.
जब हुआ मजमये, अग़यार सुनो हज़रते दिल;

ઉઠ ચલે આનકે તુમ યહાંભી, ભલે બૈઠ ગએ·
યે તો હમ ખ઼ુશીકે ક઼ુરબાન હોં, હમ છેડકે રોજ઼ ;
હમભી ઘબરાકે ન હારે, ભરલે બૈઠ ગએ·
અશ્કકી સૈલસે ઔર, આહકે શોલેસે મેરે ;
અક઼લ ઔર હોશોંકે, ઘરબાર જલે બૈઠ ગએ·
કૈસો ઈરહાદસે એ રિંદ મિલે, હમ કલ રાત ;
રાએ યહાં તક ગલે પિલમિલકે, ગલે બૈઠ ગએ·

ગ઼ઝલે સોહાન ૩૧૯

નસીમ હૈ તેરે કૂચેમેં, ઔર સબાભી હય ;
હમારી ખ઼ાકસે રુકે દેખ, કુછ રહાભી હય·
તેરા ગ઼ુરૂર મેરા ઘેઝ઼, તાકુબ ઝ઼ાલિમ;
હર એક બાતકી આખ઼િર, કુછ ઈંતેહાભી હય·
જલે હૈ શમ્અસે પરવાના, ઔર મૈં તુઝસે;
કહીં હૈ મેહરભી જ઼ગમેં, કહીં વફ઼ાભી હય·
ઝ઼બાને શાકયહ સિવા, અબ ઝ઼માનેમેં હૈ હાલ;
કોઈ કિસીસે હૈ હમદમ, ઔર આશ્નાભી હય·
સિતમ રવા હૈ અસીરોંપે, ઐ સ્ફ઼ુદર સૈયાદ ;
ચમન ચમન કહીં બુલબુલકી, અબ નવાભી હય·
સબ઼ઝકે રંગ્યો કદમ દસ્તે ખ઼ારપર મજનૂં;

કે ઈસ જનવાહમેં સોહા જિરહનાંપાતિ હય.

ગ઼ઝલે આશિક઼ ૩૨૦

આંખ ક્યું તૂને લલા હમસે મિલાઈ પ્યારે;
બુઝ ગઈથી સો ફિર, અબ આગ લગાઈ પ્યારે.
દોસ્તી મેરી તેરી યાર, નિભાયેં અલ્લાહ;
ગરચે બદનામી જમાનેમેં, ઉઠા ગઈ પ્યારે.
બાનકે દિલમેં મેરે લડકે હૈ, અબ આતશે ઈશ્ક઼;
શકલ તુને ભી નહીં અપની, દિખાઈ પ્યારે.
મૈં સિવા તેરે કિસીકો ભી, ન દેખૂં હરગિઝ;
સામને અપને અગર હોવે, ખુદાઈ પ્યારે.
દિલસે દિલ આંખોંસે આંખોંકો, મિલાકર તુઝસે;
કિસકો ખુશ આતી હૈ અબ, તેરી જુદાઈ પ્યારે.
હફ્ત ઈક઼લીમકી શાહી, નહીં ખુશ આતી હય;
ખુશનુમા હૈ તેરે કૂચેકી, ગદાઈ પ્યારે.
ચૈન જો આરામ નહીં, અક઼લ ગઈ હોશ ગયા;
દિલકો આશિક઼કે નઝર, જબસે લગાઈ પ્યારે.

ગ઼ઝલે સોહા ૩૨૧

ભૂંગુંયા તુ ચમનમેં, જરે ક઼માકો બોલે;
ફિર ગુલસે એ પ્યારે, બુલબુલ કલૂન બોલે.
આયેગા વોહ ચમનમેં, તડકેહી પૈ કરીકો;

શબનમસે કહેદ બુલબુલા, પ્યાલે ગુલોંકે ધોલે·
જાગે જહાંમેં આકર કુછ, હમને ફલ ન પાયા;
એક દિલ મિલાકે જિસ્મેં હૈં સૈકડો મલોલે·
એસાહી ભડી ભડી કરતે હોતો સિધારો;
ઘેસ દિલ્પે કલને હોની સો, આનહી થોઃ હોલે·
હમ જોબના ગયાહે, હરચંદ પરન ઘેતના;
મુંહ અબ્બે ચશ્મે આશિક, તોલી થોઃ સબનબ્બોલે
ચશ્મે પુર આબહૂં મૈં, તું આઈના હુબાબી;
રેકરુકકે પડગએ હૈં, છાતીમેં સબ ફફોલે·
કૌન એસા અબ કહે યેહ, સૌદાગલીમેં ઉસ્કી;
લા તુઝકો લેચલેં હમ, દિલખોલકરકે રોલે·

ગઝલેરદીફત·૩૨૨

જશબે હિજર મુંહ દિખાતી હય;
જાન રઈઅલકી, લબપે આતી હય·
યેહ જુદાઈ, જિગર જલાતી હય·
આંખ લી અશ્કે, ખૂં બહાતી હય·
દિલતો કુછ ચયક ચયક નહીં મિલતા;
પેહલે યેહ આંખ, ઘર ડુબાતી હય·
ચશ્મ મરીઁ તાડો, સચહય યેહી·
જેસા કરતી હય, વેસા પાતી હય·

ग़ज़ले मईसूर. ३२३

सद्केमें तेरी जुल्फ़ोंके, और तार तारके ;
दस्तारे गुलेअनार, क़बा जूरादारके.
बुलबुलने चहले कहके, रोरोके यूं कहा ;
सैयाद पासले मेरे, परपरहेगारके.
बेचोगे तो सहीह नरख़, इतनातो कीजियो ;
दीजेतो हाथों हाथ, किसी नौ बहारके.
यह वतन है हमारा, तुम पूछतेहो क्या ;
हम रेहनेवाले हैं, इसी बागोबहारके.
मईसूं तु शादरहियो, ज़माना करेगा क्या ;
हम हैं गुलाम उसशाहके, गुल गुलसवारके.

ग़ज़ले यक़ीन. ३२४

करतेहैं अपने जाल, दिखा मुब्तला मुझे ;
इस पेचसे जुल्फोंके, निकाले ख़ुदा मुझे.
दिलनेतोमेरे दीहै जरा, दूरनेकी क़दर ;
करतीहै बालबालसे, चलते दग़ा मुझे.
मेरो नज़ामें यार बोहोत, हो गया दिलेर ;
करनीतो की परस्त, न आई वफ़ा मुझे.
मैं गो रहाहूं यारके, पांउपर अय यक़ीन ;
आईहै रास्तसायअे, गुलकी हवा मुझे.

ग़ज़ले नियाज़ ३२५

सनम है गुलबदन है, महजबीं हय;
भला कहिये वोह क्या क्या, कुछ नहीं हय.
वोह सब जा है, वोह किस जगह नहीं हय.
ग़रज़ उसको, जहां देखो वहीं हय.
गया ऊधरको, फिर इधर न आया;
अजब कूचेकी तेरी, सरज़मीं हय.
मेरे अश्कोंका, और नालोंका शाहिद;
ज़मीनो आस्मां, अर्शे बरीं हय.
जहां जिस्के मुक़ाबिल, हूरो ग़िलमां;
सनम नामे ख़ुदा, वोह नाज़नीं हय.

ग़ज़ले जौहर ३२६

खुलेंगे राज़ यों जमके दफ़्तर, इधर हमारे उधर तुम्हारे;
तो क्या क्या गुज़रेगी आह दिलपर, इधर हमारे उधर तुम्हारे.
लड़ो न हमसे ऐ मेरे दिल्बर, ये जान जलने दो मानो कहना;
नहीं तो मशहूर होंगे घरघर, इधर हमारे उधर तुम्हारे.
हमारे दिल्पर है दाग़े हसरत, तुम्हारे मुंहपर है दाग़ चीचकू;
यह दोनों यमके हैं मिस्ले अख़्तर, इधर हमारे उधर तुम्हारे.
तुम्हें जब अपनी क़सम है, जाना मिला लो ऐसा मिलो के फिरसे;
ग़मे जुदाई न आये दिल्पर, इधर हमारे उधर तुम्हारे.

मिलूं मैं क्युंकर बुझाहूं हैरां, अगरये दोनो तरह है भारी;
फिरे हैं मसूस यहांतो घर घर, इधर हमारे उधर तुम्हारे;
सितम का क्या तुम जवाब दोगे, खुदा जो पूछेगा तुमको भी;
लिइ
होवेंगे मुन्सिफ जो रोजे महशर, इधर हमारे उधर तुम्हारे.
शराब है येह समझ के पीना, शराब कहता है उसको आलम;
कहीं निशेमें फुलें न मेहर इधर हमारे उधर तुम्हारे.

गजले आसिक ३२७

जिस घडी तेरी आस्तांसे गये;
हमने जनाके दो जहांसे गये.
तेरे कुचेमें नक्शे पाकी तरह;
ऐसे बैठके फिर न यहांसे गये.
इश्क हाथोंसे तेरे क्या कहिये;
नामसे गुजरे और निशांसे गये.
शम्अकी तरह रहता रहता हम;
सुब्हो एक दिनके जस्मो जांसे गये.
एक दिन हमने यारसे येह कहा;
अबतो हम ताकतो तवांसे गये.
हंसके बोलाके सुनता है आसिक;
युंही कह कहके लाखों जांसे गये.

ग़ज़ले रक्स ३२८

फ़िरूक़पे तेरे देख्ये, किसशानकी सुरखी;
पोंहचे न जिसे पंजे, मरजानकी सुरखी.
तारीफ़ दहनकी कहूं, या लबकी नज़ाकत;
मिस्सीकी उदाहट कहूं, या पानकी सुरखी.
अल्मास नज़र आते हैं, याकुतके मानिंद;
पडती है करन फूलपे, जब कानकी सुरखी.
क़ातिल मुझे करहे, कोई पेहचान न लेवे;
धो डाल ज़रा गोरीये दामानकी सुरखी.
सुन्ये यह ग़ज़ल मुझसेती, अब ताज़ रक्सकी;
दिखलाती तुम्हें साफ़, गुलिस्तानकी सुरखी.

ग़ज़ले फ़िदवी ३२९

आहूली खिजल होवे, मुअव्विर ज़रा दमले,
तस्वीर खिंची आती है, नरगिसका क़लमले.
देखा नहीं तु अहमदे, मुख्तारका लश्कर;
जिबरील ली जिस कोहमें, चलता है क़लमले.
गरमीसे अरक़ होगये, चलते हुए ये: अश्क;
उस सायए मिज़्गां तले, कुछ बैठके दमले.
हम दिल्को गया बैठ, तसव्वुरमें उसीके;
और फिरती अक़लमंदीसे, चल राह अदमले.

इस्मातकी पुरसिशके लिये, शौक़ हुये तुम ;
काश्के आयले नामे ख़ुदा, नामे सनमले·
यह् जारगह गैरे ख़ुदा, ऐसे अदब हय ;
मजनूंको सदा पोंहची है, तू उसे रकमले·
नाहककी यह तोहमत है के, ग़ैरोंपे है आशिक़ ;
गर तेरे सिवा ग़ैरको, चाहूं तो क़समले·
रातोंके तई चोंक पडे, नींदमें कुलसम ;
गर ख़्वाबमें देखे, असदुल्लाहके क़मले·
किदधी तो अजस अपना, गिरेबां है पकडे ;
लेता है तो दामाने, अली मुरतहह् कमसे·

ग़ज़ल· ३२९

किसको दिखलाऊं, आबले दिलके ;
ज़ख्म ताज़ा हुये हैं, छिल छिलके·
उसकी बेरंगीपर, कि दाकुंमें
गुल जलाये है, जिस्ने इसगिलके·
लुत्के नागजने, आपकी साहब ;
दिल लिया है हमारा, हिल हिलके·
तुझ सिवा जागका यह, क्या अहवाल ;
कूल कुमला गये हैं, खिलखिलके·
इसजता अपनेकी, करें तोबह ;

रंज खेंचे हैं, तुमसे मिल मिलके.

ग़ज़ल नासिख़ ३३०

फिर बहार आई चमनमें, जख़्मे दिल आले हुये;
यह मेरे दागे जिगर, आतशीं पर डाले हुये.
हर तरफ़ छोडूं चलाया, तेरी जुल्फ़ोंका ख़याल;
एक मुद्दतसे यह, कालेनाग हैं पाले हुये.
वाह क्या तासीर है रुख़सारे आतशी नाज़की;
शोख़ले ऐ बलख़याल तेरे, डालके भाले हुये.
जब रहे तारीकमें, हमपे बलाओं चले;
आगे आगे बने मश्अल, आतशीं नाले हुये.
पाये नाज़ुक उसने जब पाक पारी ज़मीं पर;
पार हाये संगे मरमर पर, रूई के गाले हुये.
वो परी पैकर कहा, डरता है अक्सर फ़िक्रसे;
अब तो नासिख़जी हमारे, चाहनेवाले हुये.

ग़ज़ल जफ़र ३३१

ये: रूये यार नहीं, जुल्फ़े परेशांके तले;
है नेहां सुब्हे वतन, शामे ग़रीबांके तले.
जब हुसी लेगब्ने उस, उसकी चमकती देखी;
तिफ़्ले अश्क आही छिपे दामने मिज़गांके तले.
एक नेहां दागे जिगर, सीनेमें रख्ता हूंके यूं;

जाहसे शम्अ छिपाये, कोई दामनके तले·
ऐसेंहै कोई कूं, ये गुलेफंदां तुझबिन;
ये हजर गिरियां किसी नफ्ससे गुलिस्तांके तले·
नहीं मिलनेकी जगा तुझको, जमुन कुंजे मजार;
नजे आसूदगी ऐस गुजरे, गररांके तले·

गजले नईर·३३२

नख्वाले उस्ने दिखाया, मेरा जी जलता हय;
फिर खुदाकी नजर आया, मेरा जी जलता हय·
उठ गई मेरी नजांसे तो, नहांकी लज्जत;
जे मज ऐश्कमें पाया, मेरा जी जलता हय·
मैंने तायारहूं खतखुंद, लिखूं अय साहब;
जैसा लोगोंने सिखाया, मेरा जी जलता हय·
कौन कहता है तेरे, ऐश्कसे अंजान रहा;
जीतेजी तूने जलाया, मेरा जी जलता हय·
अय नईर उस गुलेखंदांकी, महफिल तुझको;
हम जहम उस्ने सताया मेरा जी जलता हय·

गजले जेहार·३३३

कौनहै जालरे खूबीमें, तेरे हम संग हय;
हुस्नके मीलमें तेरे मेहरो, महपा संग हय·
सुरमई आंखोंका तेरेजे, कोई बीमार हो;

अेक मील उसके तर्फ़ रखना, क़दम फ़िर संग हय.
मैं ने दीवाना हुवा, सरफ़ैसे खरजावे जुनूं;
हाथमें पथ्थर लिये, हर तिफ़्ल मेरे संग हय.
जब्जे तड़्या आशिक़ोंका, जानमां हरयक़ले जाय;
ज़ेरे सर कूचेमें तेरे, ख़िश्त है या संग हय.
सख़्त ज़री है मुझे, ज़ालिम तेरी संगदिली;
आह जिससे आस्याके, संग उपर संग हय.
वोह सदा गिरगीर करे है, आस्या फ़िर फ़िर मुदाम;
मुश्ते गंदूमके लिये, छातीपे मेरे संग हय.
वोह जवाहिर पोशीके देखा हूं, मैं याक़ूत लब;
उसकी रंगीनीके आगे, लालभी अेक संग हय.
शेखकी मस्जिदमें जाना काम क्या बेदारका;
सिजदेमें अपना सनम ले, आशिक़ोंका संग हय.

ग़ज़ले जाहदशाह-३३४

किसी मस्तके आनेकी आरज़ू हय;
के साक़ी लिये साग़िरे मुश्कबू हय.
समाया है जबसे तू आंखोंमें मेरे.
जिधर देखताहूं उधर तुही तू हय.
बताउं मैं क्या अपना हाले परेशान;
अयां ज़ुल्फ़े दिलदारके रूबरू हय.

चलो क़त्ले ईरशादपर, इत्तेफ़ाक़ो ;
मगर ख़ाजे शीरींसे, मालूम चुजू हय.
निकल जाये हम, तेरे क़दमोंके उपर ;
यही दिलकी हसरत, यही आरज़ू हय.
गुलिस्तांमें जाके, हरएक गुलको देखा ;
न तेरी सी रंगत, न तेरी सी बू हय.
सताया है नाहक़ हमें तूने ज़ालिम ;
यह इनसाफ़ अल्लाहके रूबरू हय.
किया चाक वहशतने, ऐसा गिरेबान ;
न सीनेके क़ाबिल, न जाये रफ़ू हय.
शफ़क़ उनके गरदूंपे, होता हय ज़ाहिर ;
यह किस कुश्तये, बेगुनहका लहू हय.
अ़बस मुझको हंस हंसके, देतेहो गाली ;
ज़बांको संभालो यह, क्या गुफ़्तगू हय
अगर उनकी यारी शबे वस्ल बोला ;
छुरी और मुर्ग़े सहरका, गुलू हय.
रहे सायये पंजतन, बादशाहपर ;
ख़ुदावंदे आलम, निगहबान तू हय.

ग़ज़ले नमर ३३५

हज़ारजारसे हम यहांसे जुदातेथे ;

तो किस ग़ुरूरसे तुम, इंकार आतेथे·
अभीतो शरते बढ़ी, होचुकीअदा जबकर;
ऐसी भरोसेपे तुम, दोस्ती निभातेथे·
ज़रहतो याद करो, जब वक़्त वोह क्याथा;
गलेमें हाथथा औरं, मुंहसे मुंह मिलातेथे·
लबे शकर वोह अजब, दिनथे भूलतेहीनहीं
तुम्हारे मुंहसे जो हम, गालियां भी खातेथे·
अगरये रूठके जातेथे, फिरभी हम तुमको;
गलेसे अपने लगा, पांउपड मनातेथे·
हरएक तेग़ेसितम हमपको, कभीथी छुरी;
ऐ गुलबदन तेरी क्याक्या, नख़रा उठातेथे·
हुनर कैके कहतेहो तुम, कमरमतआ;
कभी ज़बांके ऊपरभी, येह न लातेथे·

ग़ज़ल नंबर·३३६

क्या निकले सुख़न आशिक़, दिलगीरके मुंहसे;
कोई बात सुनता होगा, न तस्वीरके मुंहसे·
किस्की निगहे चश्मने, मारा है तमाचा;
बहता है लोहू फ़ंवरो, शमशीरके मुंहसे·
घुसुकूको किया क़ैदके, जो ज़ंदानमें खुशहो;
आतीहै सदा कानमें, ज़ंजीरके मुंहसे·

लिखूंजीके तेरे हुस्नकामैं वस्फ़ कहुं क्या;
सुन मुंहसे बयानोंके, हरएक पीरके मुंहसे.
देता है दोआ तुजको, सनाओं यह शेरर बज;
आमीनकी सदा निकले है, तासीरके मुंहसे.

गज़लेयली ३३७

जिसको जन्नत है, सजनके दीदकी;
उसको खुशी पड़ती है, सुब्ह ईदकी.
मुजके उपर जुल्फ़ जे, दरयामें हुस्न;
मौज है यह चश्मसे, जे खुरशीदकी.
दिल मेरा मोती हो, तुज बालीमें जन;
कानमें केहता है, बातें लेहदकी.
तुज दहनको देखकर, बोला वली;
यह कली है गुंच, जे उम्मीदकी.

गज़लेसिलम ३३८

दरद मंदोंसे न पूछोके, किधर बैठ गए;
तेरी मजलीसमें गनीमत है, जिधर बैठ गए.
है गरब दीदकी यहां, काम तकजुईसे नहीं;
जाह इधर बैठ गए, जाह उधर बैठ गए.
मुश्किल उठनेके नहीं, यारके कूचेसे फ़कीर;
बेक बोसेके लिए, बांधके कड बैठ गए.

पीरोमुरशीदकी क़सम है, यही लेंगे यही;
जाके बिस्तरपे जमआ जोस, क़मर बैठगये.
कर गया काम जो माशूक़, सितमने न मुड़ा
सैकड़ों मुर्ग़ हवा बांधके, पर बैठगये.

ग़ज़ल बेनज़ीर.३३९

मुरग़े दिल मत रो यहां, आंसू बहाना मना है;
ईस क़फ़सके कैदियोंको, आबोदाना मना हय.
तेरी ही दीदारसे अब, हमने सरपरका किया;
रोज़ने दीवारतक, आंखें मिलाना मना हय.
क़त्ल करकर मुझको अब, संगी दिलोने युं कहा;
क़त्ल होजाना लेकिन, तड़फ़ड़ाना मना हय.
तड़फ़ना मत देखना, जंनरतले ऐसे दे दिल;
ईश्क़के क़त्लमें दस्तोपा, हिलाना मना हय.
ऐ नज़ीर तुमको हमेशा, चाहिये ईशारत मुदाम;
अब तुम्हें चालीसदिन, मेंहदी लगाना मना हय.

ग़ज़ल.३४०

वोह सनम हाल मेरा क्या जाने;
हूं मैं किस फ़िक्रमें खुदा जाने.
उसके मिलनेकी मुझको तोहमत हय;
वोह कहां मैं कहां खुदा जाने.

हमतो रोते हैं हंसते हैं अगयार ;
क़हर बुलबुलकी बला क्या बने·
होठ याराकेरे वोह सारी उम्र ;
लबे शीरीका बे मज़ बने ·
सुनके अहवाल मेरा केहने लगा ;
ऐसा झगड़ा मेरी बला बने·
ऐसे सईआँकसे डरो यारो ;
ख़ून आशिक़का बे हिना बने·
बख़ुदा बुत किसीके दोस्त नहीं ;
उसको दुशमनही बनका बने·

ग़ज़ले औसाई ३४१

वोह कहां बसे रहे, बे बेवफ़ाई करगये ;
मरगये आख़िर न किस्से, आशनाई करगये·
उम्र बे पायांपे अपनी, ऐसकदर ना बनहो ;
मरगने उनको न छोड़ा, बे जुदाई करगये·
आरसीमें अक्स अपना देखकर लाये गुरूर ;
चार दिनकी ज़िंदगीमें, ख़ुद नुमाई करगये·
ऐब बेई करके अकसर वोह, बेहस्तये किसे·
हाथसे अपने वोह अपनी, बग़नुमाई करगये·
रेह गया औसाई अंतओर, आख़ेरशा दोनो गये ;

ले लवाघे कुरगये, ओ ले जुराघे कुरगये·

ग़ज़ले ईशरत ३४२

शोले फ़िराक़में दिलपर, कुबक़ अलीसे हय ;
सहर है दूर पेरा रंग, फ़ूक़ अलीसे हय·
अली लिखा नहीं मैं हाल दिलका ओ क़ासेद ;
हुवा अ शोक़में उडता परक़, अलीसे हय·
हनोज़ दर्द न हुवा हय नहीं, तेरा बिस्मिल ;
के बलबलेमें तपीका लबक़ अलीसे हय·
इरादा सैरका करता है, बाके चोह गुलक़ ;
यह नाजुकीके बजीपर, अरक़ अलीसे हय·
किसीने शामके आनेको क्या कहा ईशरत ;
यह मुहपे आपके फ़ूली शफ़क़ अलीसे हय·

ग़ज़ले हैदरी ३४३

बागे महफ़िलमें तेरे कलतो, अबज घूमरही ;
राह पाई न कही जाह, सबा घूम रही·
मोत्या ओर चंबेली, गुले नस्रीनो गुलाब ;
केतकी मस्त हो डालीपे, सदा झूम रही·
पानतो कत्ल हुए यारके, लबसे मिलकर·
जे कलीथी सो हिना, जरके पा चूमरही·
क़ाइदा ठीक नथा, क्या करे पर हैदरी आज ;

अफ़ज़ल पंजेकी तरह, हमने तई तूम रही।

ग़ज़ले नासिख़ ३४४

नेज़में याद हुए, यार नज़र आता हय;
सीनेमें रौज़ने दीवार नज़र आता हय।
इश्क़े गुरबतमें निगह, अपनी जिधर जाती हय;
वही दूआ वही बाज़ार, नज़र आता हय।
मय परस्त ऐसे है, सोते हैं अगर मसजिदमें;
ख़्वाबमें ख़ानओ, ख़म्मार नज़र आता हय।
चांदसा चेहरओ ताबां है, मगर ईस पर भी;
ज़ुल्फ़में रंगे शबे, तार नज़र आता हय।
लाग जाता है वही, पैके अजल बालीं पे।
जब मुझे क़ासिदे, दिलदार नज़र आता हय।
गरचे हूं हिंदमें लेकिन, मुझे नासिख़ हरदम;
रौज़ओ अहमदे, मुख़्तार नज़र आता हय।

ग़ज़ले यक़ीन ३४५

नज़रमें बालोंकी, इस जानेको क्या कहिये;
क्या काम किया दिलने, दीवानेको क्या कहिये।
आशिक़ जो रहे जलता, माशूक़के काम आवे;
क्या खुबी है जलजाना, परवानेको क्या कहिये।
दिल छोड गया हमको, हिजरसे तबक़को क्या;

अपनेने दिया येह कुछ पैमानेको क्या कहिये·
तहकीकको आलिम रहे, कुछ काम न ईसमाया;
इरशादके घिस नासहके, मर जानेको क्या कहिये·
अजनेमे यकी आह क्या, चोरीसे फिरते हैं
फिर होसे न कहिये तो, दीवानेको क्या कहिये·

ग़ज़ले जलहार·३४५

दिलको पासथा जो होत, हमने खबरदारीसे;
जान जरदारीसे, होश्यारीसे गम ख्वारीसे·
हुस्ने साहबकी शैदाई तपे, नज़र करबैठे;
अनके जूतेके पेहचानके, होश्यारीसे·
हमसे बातिनमें ख़फ़ा गैरोंपे, ज़ाहिरमें नफ़ा;
यांतो उम्मीद नथी, शरते वफ़ादारीसे·
साहबीपर वोह, सितमगारके धोका पाया;
अपना ईमान लरजता है, येह अयारीसे·
शुकर हक सबकी दौलत, के शबे हिजरके दिन;
वस्ल हासिल हुवा, तालेकी मददगारीसे·
जानेजत लुत्फ अदा, वस्ल मिजाज और अंदाज;
सबके सब दुश्मने, क़ातिलहैं मेरी यारीसे·
सो रहे आन लिपट, अपने सनमसे जलहार;
नींद आती है शबे, हिजरकी बेदारीसे·

ग़ज़ले शाहां ३४७

माशूक़के आनेकी, शि[illegible]भी ख़बर आवे ;
अल्लाह करे दिलकी येह, उम्मीद बर आवे.
ख़ुरशीद ख़जल होके, छिपे अब्रके अंदर ;
महफ़िलमें अगर आनके वोह, रश्के क़मर आवे.
करताहै निसार उसपे, इक़्द ख़ोशाये परवीन ;
कानोंमें करनफूल, पहनकर अगर आवे.
क़िस्साकमहो वोह नफ़्स, जिसे हूल न हूल हो ;
परशाख़ वही ख़ूबके, जिसको समर आवे.
आता नहीं दिलदार नज़र, किससे कहूं मैं ;
है मुन्तज़र आंखेंके, कोई पल नज़र आवे.
शाहां तु ख़ुशी अपनीसे, कह मतलब अेसानी ;
माशूक़ कभी आग़ोशमें, तेरे अगर आवे.

ग़ज़ले नज़र ३४८

हमतो आशिक़हैं तेरे, नाज़ उठानेवाले ;
तुमसे कम देखेहें, महबूब सतानेवाले.
बंदकर क़ैद महब्बतमें, ख़बर मेरी न ली ;
दाममें फिरके फंसे, दाम छुड़ानेवाले.
गुलशने वस्लमें क्या, लुत्फ़ करीथी घड़ियां ;
आन क्या मरगये, घड़ियाल बजानेवाले.

कल जो रस्तेमें मुलाक़ात हुई तो येह कहा;
कहां जाते हो तरफ़ग़ैर जलानेवाले·
गुज़री मुद्दतके मेरे साथ, जपरे नहीं जाओ;
क्या हुए यारो गले, हमको लगानेवाले·
युं तो औक़ात गुज़रती है, मज़ेदारीमें;
न मिले चैन मज़ेदार दिखानेवाले·
जबके मिलना हो नज़र, यारसे कहना जोड़;
क्या ख़फ़ा हम न रहे, यारो मनानेवाले·

ग़ज़ले इंता· ३४९

एक दिनभी तेरे मिलनेकी शब हाथ न आई;
वोह रात गई रातकी, फिर बात न आई·
औरोंको रोज़ वस्ल, मोयस्सर हुए ज्युंकर;
हम मलते रहे हाथके, हय हाथ न आई·
इस रातको जाते हुए, तेरी और मेरी·
और इस सिवा दरपेश, मेरे हाथ न आई·
जो लेदकी बातथी, मगर आनेके ख़ातिर;
कहते हैं कही तुमसे तो, वोह बात न आई·
अब ज़िंदगी बाक़ी है तो, फिर आन मिलेंगे;
पर तेरी मोयस्सर जो, मुलाक़ात न आई·
इमान दिलोंकी आइलको, सब छोड़ गये हम;

इन बातोंमेंसे एकभी कोई साथ न आई.
जस्मोंकी घटा छाई है, असीमें डूबाके ;
इस्तौरकी नंगी कुली, बरसात न आई.

गज़ले नासिख़ ३५०

कमर तेरी गुम है, मुझे जुस्तजू हय ;
दहनकी जगह है यही, गुफ़्तगू हय.
जो हैं मुशिगाफ़ उनकी येह गुफ़्तगू हय ;
कमरका तेरे जिस्मपें, एक मू हय.
तेरी आरजू हो, अगर आरजू हो ;
यही आरजू है, अगर आरजू हय.
येह अंधे हैं जो कहते हैं, हम हैं हम हैं
जो आंखें हों रोशन तो, फिर तूही तू हय.
किया पानी पानी, तेरे हुस्नने ऐसा
के सरवे चमन आबे जू, आबजू हय.
न मैं हूं मुखातिब, न तू है मुखातिब ;
यही मैं यही तू, न मैं हूं न तू हय.
जही जेनेहत है, यही शानेहत हय;
जो एकसू है सबसे, यही चारसू हय.
तसव्वुर जो है, हरहकी तरह नासिख़ ;
जिधर देखता हूं, यही रूबरू हय.

ગઝલે વહશત. ૩૫૧

ક્યા જલા હૈ મેરે સહન, આશ્નાઈ આપકી;
માર ડાલે હૈ ગરઝ હમકો, રૂખાઈ આપકી.
કિસ ભરોસેપર રહે કોઈ, તુમસે અબ અય્સે બડી.
ઝિન્દેપર મશહૂર હૈગી, બે વફાઈ આપકી.
ઝિડકિયાં હર આન દેતે હો, સરે મજલિસમેં તુમ;
અયસી ક્યા સાબિત હુઈ, હમસે બુરાઈ આપકી.
બાત કરના હમસે ઔર, આંખેં લડાના ગૈરસે;
દેખલી બસ યાહ મુશ્કિલ, પારસાઈ આપકી.
ક્યા શિકાયત હૈ મેરી જાન, તુમકો વહશતસે કહો;
અબ તલક હમને તો કુછ, મરઝ ન પાઈ આપકી.

ગઝલે જુરઅત. ૩૫૨

સેથો
લે આઈના માંગ ઉસ્ને જબ, યહ અશ્આર નિકાલી;
જુલ્માતસે ક્યા રાહ, નુમૂદાર નિકાલી.
વોહ ઝુલ્ફ અને ઉસ્કે લટકે દમે નઝઅમેં આકર;
મુંહસે ન શિકાયત કહી, અય યાર નિકાલી.
યું આન તેરે કુચેકે, આશિકોંને બલિસમ;
સારી ઉસ્કી જમોહર સરે, બાઝાર નિકાલી.
નઝીરે ગાગર શીક ન થા, ઉસ્કો તો ઉસને;
ક્યું બામપે ખિડકી સરે, બાઝાર નિકાલી.

હમ સાથે જુગાને લગે, જબ અપને ઘરોંકો ;
મેં દિલસે ને યેક આહ, હરર બાર નિકાલી.

ગઝલે મહકુમ. ૩૫૩

કુએ હો કિસ્લિએ બેઝાર હમસે ;
ભલા કુછ તો કહો, દિલદાર હમસે.
તુમ્હારીહી ફિદાયર, કાસબબ હય ;
ન લડતે હૈં યેહ સબ, અગ્યાર હમસે.
મેરા હય સચ બહમ પરવાને કિસ્મત ;
હુએ બરહમ ન ભુલઈ, યાર હમસે.
ભુનૂં ક્યા તુમકો કુછ, સૌદા હુવા હય ;
ન લડતા હૈ સરે, બાઝાર હમસે.
મુકર્રર જબ કહા, મૈંને ગઝલ ;
ભલા કુછતો કહો, દિલદાર હમસે.
તુ ફેકર યું કહા, ચલ ઉઠ યહાંસે
અબસ મહકુમ ન કર, તકરાર હમસે.

ગઝલે બલીક. ૩૫૪

મુરગાંને કફસ કરતે હૈં, અબ નગમહ સરાઈ ;
ક્યા ફસ્લે બહારીકી, ચમનસે ખબર આઈ.
આશિકકો તો નરગિસને, આંખ દિખાઈ ;
કર ચાક ગિરેબાન, નસીમેં સહર આઈ.

उस यारके मिलनेकी अब उम्मीद मुझे थी;
क्या राह गये भूल, कहो तु किधर आये.
जिस घरमें ज हम रहते थे, मुद्दतसे हम औरयार;
खाली अब यहां देख मेरी, चश्म भर आये.
बीमारकी ले जाके ख़बर, अपने मसीहा;
क्या फ़ायदा अब उस्से, अजलकाम कर आये.
गुलशनमें किसी शख़्सका, अेक ठेर हे बुलबुल;
मिनकारमें ले आके यहां, फूलघर आये.
अैसा ती कहीं देख्या हुवा, होगा जहांमें;
आक़ल अब जलीके जिगर, अफ़गार पर आये.

गज़ले आशक़ नं. ३५५

अरक़ जब उस परीके चेहर, अे पुरनूरसे टपके;
ख़जिल हो गुलसे शबनम, जूं लोहू नासूरसे टपके.
मेरी आंखोंसे ख़ूनी अश्क, युं गिरते हे पलकोंपर;
लोहू सूलीके ऊपर जूं सरे, मनसूरसे टपके.
अगर केफ़ी सखुन मेरा नेहाले, ताक़को पोंहचे.
सुराहीशाख़ जब आये, शराब अंगूरसे टपके.
अगर उस जुल्फ़ मुश्कके आमेज़से, चीनीमें जालआये;
अज जमें ईतरो अंबर कासमे, फ़ग़फ़ूरसे टपके.
करें फ़रियाद रोरो यारको, जब याद कर आशक़;

हम ऐसा शाक़िर जो लोहू भी, जांगे सूरसे टपके.

ग़ज़ले आक़िल. ३५६

उस रंगीलेने जो हाथोंको, लगाई मेंहदी ;
कौनसे बाग़की सब्ज़ हरियो, मंगाई मेंहदी.
अश्के गुलगूंसे हुआथा तरो, ताजा वोह दरख्त ;
जिसकी डालीसे सजन तुमने, तुड़ाई मेंहदी.
रश्के उश्शाक़ किया, दस्ते हिनाईके तई ;
पोर पोर अपनेपे, जिस वक़्त रचाई मेंहदी.
उड़गया देखतेही रंग, शफ़क़का नागाह ;
जेर दम जोके हथेलीकी, दिखाई मेंहदी.
हाथमें सुरखी न समझे, कोई आक़िल उसके ;
किसी आशिक़का ह्य दिल, मुठीमें लाई मेंहदी.

ग़ज़ले गुलशन ३५७

हुवा क्युं शक्ज तू मुझसे जहां हय ;
हुवा है ना कोई, होगा कहां हय.
तेरे नक़्शे क़दम, पाके बराबर ;
ज़मींसे दूर फ़लक, आस्मां हय.
रखे सरपर न क्युं कर, कज कुलाह वोह ;
दिलेरो दिलबरो, रुस्तम ज़मां हय.
निशाना क्युं न हो, दिल जोह पोडका ;

निगाह एक तीर है, अब्रू कमां हय.

ज़खरसे नहर अयू, तेरे मसीहा ;

एक कुश्ता जिलावे, निगाहे फुलां हय.

शा बअसूत क्या पडे, ऐस लडमाह अज ;

परी वश कामकां तो, ज निशां हय.

ग़ज़ले सिराज. ३५८

दिलके पुरने हुये अज, एक धनक बाकी हय ;

सब तो आखिर हुये किताब, एक सबक बाकी हय.

कुरत है मुझको शबे कुलकमें, मगरिबकी नमाज ;

उस शहाबी लबे मेगूंका, शफक बाकी हय.

तुझ कदे पाकी खिजालत, सेहर एक गुलशनमें ;

फुलपर कतरे शबनमसे, अरक बाकी हय.

नगके उस बाजे परेशांकी, यही है ताअबीर ;

गैरफानी है मगर नफसे, हक बाकी हय.

जन देता है तेरे हिज्रकी सख्तीसे सिराज ;

या शिताबीसेती अयजान, रमक बाकी हय.

शरबते वस्ल पिला, वक्त सकरका आया ;

उन्ते नरीमें तेरी जन, कहत बाकी हय.

ग़ज़लमकबूल. ३५९

तमन्ना सेरे गुलशनकी, अलीसे याद बाकी हय ;

नगर कैद कफ़स गुलसे हो तो, ईरशाद बाक़ी हय.
लो हू दामनसे तु धोया तो क्या लेकिन क़ियामत तक;
हमारा खूं तेरी गरदनपे, ऐ जल्लाद बाक़ी हय.
मैं देखा बागमें आकर, न गुलहै और न गुंचा हय;
चमनमें बुलबुलोंकी हसरतें, ईरशाद बाक़ी हय.
मैं देखा लैली मजनूको, और फ़रहादो शीरींको;
चले अरमान इस तस्वीरका, बेहज़ाद बाक़ी हय.
न लो हू है जिगरमें और, न आंसू आंखमें मेरे;
मगर तूने मुहब्बत दिलमें ऐ, ईरशाद बाक़ी हय.
निकाले ख़ंजरी तेग़से, उठादे अय परी पैकर;
कि तेरे दरसमें हमको, मुबारक बाद बाक़ी हय.
ख़ुनके थेज थे उस्ताद, उनका हो गये यारब;
मगर दस्तख़तमें मक़बूल, ऐक उस्ताद बाक़ी हय.

ग़ज़ले सौदा नं० ५०

हम हैं वारस्ता, मुहब्बतकी पाददगारीसे;
सबसे आज़ाद हुये, दिलकी गिरफ़्तारीसे.
शबे ग़फ़लत मेरी है और, ईक़त ऐसी शबताब;
ख़्वाब और हो सफ़र, रातकी बेदारीसे;
लुत्फ़ तलबमें यः खोया, आपको मैंनेके निदान;
ताबिज अपना मैं हुवा, तेरी तलबगारीसे.

मै परस्ती है मेरी बादःसे आमुरव्वते फ़क़त ;
तौबा सदक़े मैंने की है, मेरी मैख़्वारीसे.
शक यह है कैसे बदीका, तेरे किस काफ़िरको ;
मुझपे जो गुज़रीसो, मेरीही पर्दादारीसे.
काम दिल जब तलक हो, तुझसे हमारा हासिल;
काम अपना तो हुवा, बचे है बीमारीसे.
पांवये गर रोहरे जूतांमें, तुपरे जो सोदा
रहियो बाज़रे मुहब्बतकी ख़रीदारीसे.

ग़ज़ले रब्न-३५१

बशकर लबने लब अपनेसे, सुनाई गाली:
मुझे मीठीलगी ख़ुशहोके, मैं खाई गाली.
क्या हलावत थी तेरी गालीमें, अल्लाह अल्लाह ;
कंद मिसरीसे मगरथी, यह बनाई गाली.
छेड़कर तेरे तई, आपसे हम खाते हैं ;
आशिक़ोंको तेरी है, दूध मलाई गाली.
तुरशरू होके शकर लबने, मुझे देता हय ;
पसन्द रफ़्ती हय बराईमें, मिठाई गाली.
हे रब्न तेरी ज़बां येह तो, लिपट शीरो शकर ;
यह नई तरहकी अब तूने, बनाई गाली.

ग़ज़ले रसिक. ३५२

निगरांके सुन येह बनिजे रुखे, दिल ईरेजपरी रही;
मेरी चश्म मुंदले मुंदले तड तेरी, महव बल्वःगरी रही·
पसे मरग बिस्मे निबर, शसुहू मुशके होगयासमन वले;
यही फूंरहा दिले फूंशुद यही, चश्मकी न तरी रही·
तुम्हें गुलकी बिस्ने बनाया जूडहा, मुझसे उसने सजाहे तूं;
यहां तुमतो परदह निशीं रहे मुझे, साहदरबदरी रही·
मेरे पास बिन्से हुनर तो थी, वले जूदोशारी थी तेरी यहां;
के मलाइके बेशाज हासदा बहां, बिन्से बे हुनरी रही·
नहीं होरियालोंपे कुछ हसद मुझे रश्के है तो उन्पे हय;
बिन्हे तेरे बल्वेके सामने, मेरी तरह बे ख़बरी रही·
ये बयाज है आखरी शारोकी कुली होशहो कुली रईतगी;
न यो गिरय अ दिलेशाज रहा, न यो बरीके सहरी रही·
बिगर और दिलसली रख्ले थे वले होसकान को ईतरई;
हद उसके नावके बुल्मकी येह, मेरीही जेबिगरी रही.
मुझे सोंपके रगपे हिबरवे, हुवे युं बुदाके हिरनवे मिले;
मेरे दिलमे ताहमेया पसी योह, अमानत उसकी धरी रही·
नथी चश्मे रासिखे जस्ता दिलके लीजाली जस्कुसे. दोस्ता
शजो रोक बमपुर आपकी रधिरा, आंसुवोंसे तरी रही·

ग़ज़लेम ; क़ुम. ३६३

जब हसे गुलचमनमें, खिलखिलके;
क्युं न रुठे हो, ऐ अुनूं दिलके.
जहरे उल्फ़तमें यूं जही जयें;
पर न पोहलान होयें साहिलके.
नासेहा क्युं अजस तु जकता हय;
हम हैं तालिब फ़क़ीरें कामिलके
कुछ तो मजलिसमें है, तिलस्म दिला;
होश उडते हैं यहां जे आक़िलके.
याके सीनेसे ले गये दिलको;
कुब्र हो जिन्से ना मुक़ाबिलके.
करके जहोश ले गया दिल वोह;
जूरने पाये होशसे गाफ़िलके.
याक़रये पस्ल करके मुकरे हय;
ऐ शाहनशाहको में जातिलके.
लेगे कुरक़तसे ऐ नज़ा पेश;
ज़ूख कुके किये मेरे दिलके.
क़त्ल करनेसे जेहर अय मह़कुम;
खुल गये जान लेगे क़ातिलके.

ગઝલ ૩૬૪

જૌહરસે કજ આલૂદહ હૈ, શમશીરકી સૂઝી;
પર કત્લકે મહઝરપે હૈ, તહરીરકી સૂઝી.
બેરહમ હજારોંકો, કિયા કત્લ જો તૂને;
સાબિત ન હુઈ એકભી, તકસીરકી સૂઝી.
ફુલ મૈંને ચમનમેં જો, લગે ગુંચકો દેખા;
આંખોંકે તલે ફિર ગઈ, તસ્વીરકી સૂઝી.
આતા હૈ જો ઉસ જોડીકે, ઝંઝીરકા આલમ;
પર કૈદમેં ભી હિલ ગઈ, ઝંઝીરકી સૂઝી.
હાસિલ તુઝે ક્યા હૈ, મેરે સમઝાનેસે;
કબ માનતા હૈ વોહ બુતે, બેપીરકી સૂઝી.
દામાને નસીમે સહરી, મુશ્ક ફિશાં હય;
શાયદ યેહ ખુલી ઝુલ્ફે ગિરહગીર ક સૂઝી.

ગઝલેનૂર-૩૬૫

મુઝા બતાકૂં તેરે, હિજરકે મારે આરે;
મેરે જાની મેરે દિલબર, મેરે પ્યારે આરે.
અઁરહ સરપે ચલા તુ, ચલેકિન મૈંતો;
શૌકમેં તેરે ઉઠ જાઉંગા, આરે આરે.
મુદ્દતેં હો ચુકી ફિરતે, હુએ આવારોંકે.
એક દિન રાતકો મેહમાન, હમારે આરે.

चारदरके चाह तेरा, चांदसा, मुखड़ा जो मेहर;
बैठा गिनताहूं ईलडपर, कुसतारे आरे.
नूर जाता है अज़ जिसके जुदाईसे तेरी.
रश्के ख़ुरशीद पैरे माहके पारे आरे.

ग़ज़ले नंबर ३६६

जज़्बमें रोने लगे, यारके समझानेसे;
राज़े दिल छिप न सका, अश्कोंके बरसानेसे.
दिलसे जाता न रहा शौक़ तमाशेमें, क्या क्या उलझा;
वाह है वाह ज़ुल्फ़के सुलझे, न के सुलझानेसे.
हाथ गरदनमें न डालो, न मिलो तुम तो सही;
नफ़रत होगई थी ग़ैरोंके बहकानेसे.
वोह न शरिब नये छलाही, कहीं मैख़ानेसे;
दिलको शीशेमें भरूं, आंखोंको पैमानेसे.
जो मसीहा तेरे जानेसे, मैं मरजाताहूं;
जान आजाती है तनमें, तेरे आ जानेसे.

ग़ज़ले नंबर ३६७

ताज उसके देखनेकी, न लाये चले गये;
क्या क्या परी जमाल थे, आये चले गये.
आदम रहा न कोई, पयंबर रहा नहीं;
वोह ली छसी ज़मीनमें, समाये चले गये.

दारा रहा न वह मन, सिकंदरसा बादशाह ;
तख़्ते ज़मीं पे सैंकडों, आये चले गये·
आलम पिया यह ज़ुलेखा, युसुफ़की चाहमें ;
रोके हज़ार ब्याहके, आये चले गये·
देखा नज़र मैंने चमनमें जो आपको ;
मेंहदी लगेके हाथ दिखाके, चले गये·

ग़ज़ले छिनशी·३५८

लखूडाइप सबधबडहर आइल चुलबुला हर हय ;
सुभडडा नूरडा भुषडा ग़ज़ब, उसकी सब्ज़वर हय·
ज़बर लीने यह किस्के पांवकी, अदबेल आहर हय ;
के है ठाकरमें जिसके दिल्में उठती इरडराहर हय·
जब कहताहूं दयानेकी, उनकी बोलदो चुपकी ;
नहींतो सर है मेरा आज, और साहबकी चोखर हय·
अरे ज़ालिम यह क्युं आया नहीं, मालूम है मुझको ;
जलाके जिसकी दिल लेता पडा, सीनेमें चरचर हय·
जलाके जब मैं लेताहूं तो यूं कहता है वोह ज़ालिम ;
तुझे मैं खूब समझाहूं, अरे तू एक निरबर हय·
फिसल जाता है जब मखमलका तकया, अपने पहलूंसे ;
तो याद आती है किसकी, वोह मनकी मुजको रपर हय·
कहा पैने जब कुड मुंहसे हाय मरताहूं ;

तो क्या केहते हैं यल ज़ूठे, मेरे येह सज्जनावर हय·
जयाद किस तरह छोडूं, सरापा हैस तेरे दिलको;
के लोगों पहलूकी हर मेंड मोंडाकी लगाय रहय·

ग़ज़ले आतश· ३७१

आज बुलबुले यारके रुख़सार तक आने लगे ;
चश्मये खुरशीदमें भी, सांप लेहराने लगे·
आईनाए हुस्नको, महताबे भीना देखकर ;
आनये खुरशीदमें हम, अश्क टपकाने लगे·
दे दिया सुरमा नरगिसको, डरवाने शबनमे आह ;
हूं अगोला कमरहां, बंगालमें लहराने लगे·
शिकली सजदल करे है, तेग़ खूने यारको ;
नेक बेहरथे नहां सब, साईं दिखलाने लगे·

ग़ज़ले मौलाई· ३७२

પગ સાંકળ
दिल कुपा पाजेब जंजीर, खुदा खैर करे ;
दामे है बुलबुले गिरहगीर, खुदा खैर करे·
किसकी आमद है सबा, आज ये गुलशनकी तरह ;
कहती है बुलबुले दिलगीर, खुदा खैर करे·
सुरख़ पोशाक पेहन बैठे, होम तख़्त ऊपर ;
किसके है क़त्लकी तदबीर, खुदा खैर करे·
शबे बिस्मिल मुझे बिस्तरपे, तड़पते देखा ;

हंसके बोला मेह तन्वीर, खुदा खैर करे·
कज़ई यांद तेरी आया तो यूं केहते हैं रकीब;
कुछ मौलाई की तौकीर, खुदा खैर करे·

गज़ले गरीब ३६९

फ़िक्र-कुदर मैं जले करूं, यार जुदाई तेरी;
अक़्ल हैरां है मेरी, देख सफ़ाई तेरी·
आफ़रीं कहिये मियां तेरे, मुसव्विर के तई;
जिसने इस खूबीसे तस्वीर, बनाई तेरी·
क्या करूं किससे कहूं, कौन करेगा आसान;
सख्त मुश्केल है मेरे हक़में, जुदाई तेरी·
येह जुदाई जो नहां, जीव न होती पैदा;
क्या खुदा खाली ही रेहती, येह खुदाई तेरी·
रोज़े महशरको खुदा पूछेगा, सफ़ाईसे मुझे·
तो मैं ये दस्त दिखाऊंगा, दुहाई तेरी·
या मोहम्मद तेरा दर छोड, कहां जाये गरीब;
बादशाहीसे तो बेहतर है, गदाई तेरी·

गज़ले कैन ३७०

कर दिये बाग़के दरबंद, बागबानोंने;
आफ़रीदा बोल दिये आके, मेहरबानोंने·
ताज आई न मुझे लरके, नज़रसे देखूं;

कर दिया माल परी ज़ादोंके, घिनसानोंने

दिनको है चैन न मुझ, रातको नींद आती हय;

तुझपे गुल्शाने परी, हमसे जो जवानोंने.

ताफ़्ता सब देते हैं अब, भूनी सो ग़मोज़ार मेरे;

कैज़ क्या पाये मियां, शम्अ़से परवानोंने.

ग़ज़ले वहशत. ३७३

निगाहे यार हमसे आज, बे तक़सीर फिरती हय;

किस्मतकी कुछ नहीं चलती है, अब तक़दीर फिरती हय.

कली तू चैन पायेगी उसे, गोरे ग़रीबां तक;

के मुद्दतसे हमारी खाक, दामनगीर फिरती हय.

मैं उस लैलीका दीवाना हूं, गाफ़िल जैसे सहरामें;

बग़लमें अपने मजनूंकी लिये, तस्वीर फिरती हय.

पड़ा पे दश्तमें शाहो गदाका, ऐक हल्का हय;

जुलैखा हर गली कूचेमें, बे तौक़ीर फिरती हय.

तेरा दीवाना जबसे उठ गया, सहराये वहशतसे;

बगोलेकी तरहपर ढूंढती नज़र फिरती हय.

ग़ज़ले मूसा. ३७४

चमनमें वोह गुले रअ़ना तराना, अबके गाता हय;

सरासर बुलबुलोंको ऐक ज़ेरी, वजद आता हय.

योह दउर ताज ज़ुल्फ़ोंमें है, बिस्मिल बनाता हय;
दिले हसरत नहक़को नजरे योह, बेताबपाता हय.
जबस योह बेवफ़ा क्युं दिल, दोस्तोंको सताता हय;
छेयर अई बोसेके क्युं गालियां, लाखों सुनाता हय.
कलक़ तेरी जुदाईका मुझे, वहशी बनाता हय.
उठाता है बिठाता है, हंसाता है रुलाता हय.
सहर तक शामसे फुरक़तमें गिनताहूं मैं सैयारे;
जुदाईमें तेरी आजकी भी, याद आता हय.
कोई जउर मसीहासे कहे, मेरेके ऐ ज़ालिम;
तेराबीमार तुझको अब हमें, मुरदन बुलाता हय.
तजल्ली सी झमकती है, जब आंखोंमें मूसाकी;
योह रुखके मेहरे ताबां जलवेसे हैरान दिखाता हय.

ग़ज़ले मूसा—३७५

सरपे साक़ी दौड रउस फ़ोलन देजये ;
बागमें उशाकको गुल रुखे मायल देजये.
गोस्तके हैं सायल, और सायलके हैं सागरे ;
जाह मयखाह फिर कहलयेह, साक़ीको सायल देजये.
आशिक़ीका शौक है सैलाके, माशिक ए दिला ;
चाहिये यह शालमें ल, मन्नूंका बनबन देजये.
कुछ मोयस्सर हो सिवा, दूल्हेके ऐसा जुस्तां ;

जलो सद्दहा है जहांमें, प मुझे देखिये·
फूल कुयोंसे तुला लड़े, बालोंसे मिला;
पार मूसा होगया येह उस्का बचपन देखिये·

ग़ज़ल ३७६

ख़ासिहा लाद असर, यारके आ जनेकी;
जान जाती है चली, हिज्रमें दीवानेकी·
आप आये न कभी ख़लवत, इताबत लेने;
सैकड़ो राह दिखाके, मुझे तरसानेकी·
चश्म गिरयां है सदा, सीना तो बिरयां है मुदाम;
आरज़ू जपे है बस, जसे गुज़र जानेकी·
तु मिले ग़ैरोंसे, मैं आंखोंसे अपने देखूं;
हाईसद है इसे बस जमे है, मर जानेकी·
ऐ सबा जाके ख़ुदा कुछ मुझे तदबीर बता;
या उसे लाके मिलाया, मुझे ले जानेकी·
गिरयह जारीपे मेरे रहम नहीं आनेका;
अब तलक चश्म मेरी, ख़ून है बरसानेकी·

ग़ज़लेम हकुम ३७७

तेरे दरपे हम आके पड़े हैं सजमन सफ़ूरके रहेन वतनके
तेरे हिज्रमें जानिये अफ़्सोसितमन कुजरके रहेनके कुझे
तेरीउल्फ़तेसरहसे मैंहिज्रगिरियस्पडीराफ़सेलफ़्तेनिगर

रहे रोते सदा जो दीदये नम शरर के रहे न जल न के हुए·
जले. पै ग़ाम दिल के वो हहोव सके, ग़म पे फ़िर न रह लुत्फ़ रहे के जो-
न सके ;
न हुए हैं वो हली हाल हम रहे मन, गर रहे रहे न दहन के हुए·
यला घर से निकलके जैसे रहे मन हुए, शाद यो: सुन के यह अप-
ना सुख़न ;
नहीं इल्लसके पर किसी तरह से हम, न शान रहे रहे न यमन के हु-
ए·
दमे सुब्ह न आया है जाद हजन ले शायाद, आया है अपने लेसान म
कुंआरा रोशा ;
हुए फ़िर न रमें रो रो के हम जेहमन, ना ग़ज़ रहे रहे न सुख़न के हुए

ग़ज़ले नसीर देहलवी· ३७८

दिल कहीं मेरा गिरफ़्तार हुवा, या हता हय ;
फ़िर मुझे इश्क़का आज़ार हुवा, या हता हय·
वो हतो परदेसे निकलता नहीं, जो हर अयदिल ;
निस्का तू तालेबे दीदार हुवा, या हता हय·
दे जलेने दो मुझे औरत्नी, यारो उसको ;
जंद जब रोज़ने दीवार हुवा, या हता हय·
जाले करता है रूकापरकी, खुदा खैर करे ;
यारो हमपर सितमे यार हुवा, या हता हय·
रोज़ गुल जाता हूं कुरकतसे तेरी, सीनेपर ;
सीना अब तख़्तये, गुलज़ार हुवा. या हता है·
रात सब यस्सड़ी ज़िन्दगीमें. कटी, हाय नसीर ;
दिन बुढ़ापेका नमूदार हुवा, या हता हय·

ગ઼ઝલે મહ઼ડુમ ૩૭૯

નસીબ સુતેલો

બખ઼્તે ખ઼ાબીદએ બેદાર હુવા ચાહતા હય;
મેહરબાં હમપે સિતમગાર હુવા ચાહતા હય.
રાહે ઉલ્ફ઼તમેં દિલા કોઈ નઝર તુહ્ફ઼ગિઝ;
પેશીયા ફ઼િદરે ઉશૌંર હુવા ચાહતા હય.
તુંદ ચલતી હૈ હવા આબ દિલા આહોંકી;
ફુટે યેહ અબ્રે ગોહરબાર હુવા ચાહતા હય.
નિશા આલૂદહ તેરી દેખકે, આંખેં સારી;
મોહ઼તસિબ આપહી સરશાર હુવા ચાહતા હય.
દિન ક઼િયામતકે ક઼રીબ આયે હૈં કુછ ગ઼ૌર કરો;
ચાક યેહ ગુંબદે દવ્વાર હુવા ચાહતા હય.
અશ્ક બિન આહ દિલા, તૂન બહાયા કીજ્યો;
તુહી ક્યા ખૂન અ઼મલદાર હુવા ચાહતા હય.
હૈ યેહ બે અક્લી ફ઼ાલત તને લાગી મહ઼ડુમ;
ફ઼િકરકે બોઝસે ખ઼મદાર હુવા ચાહતા હય.

ગ઼ઝલે સુરઅત ૩૮૦

દરદો ગ઼મે ઇશ્ક઼ને મારા મુઝે;
અબ નહીં દમ લેનેકા યારા મુઝે.
બાત મૈં કિસસે કહું અય મેહરબાં;
ધ્યાન તો રેહતા હૈ તુમ્હારા મુઝે.

डूबगया फिर न वोह, पाये है यार ;
जहरे महब्बतका किनारा मुझे .
चोंक पडा सुन्केही आयाने पा ;
मैं यही समझाके पुकारा मुझे .
हिज़्रकीरात देखये अब क्या दिखाये ;
दिनतो गया रोतेही सारा मुझे .
उड़ नकूं नामका जुरअत कुं मैं ;
चीरे अगर छिन्दका आरा मुझे .

ग़ज़ले अहमद ७१

ग़म्ज़ये चश्मसे मारा मुझे ;
करदिया वल्लाह दोपारा मुझे .
जुल्मो सितम उसका सहूं कबतलक ;
अब नहीं ग़म खानेका यारा मुझे .
हिज़्रमें उस यारके मरता हुं मैं ;
कुछ नहीं अब जीनेका चारा मुझे .
अब तलक उस बुतने ऐ यारने
मीठी ज़बांसे न पुकारा मुझे .
देवें यह दिल किसको, अब अहमद चला ;
दोनो जहांसे हुय तु प्यारा मुझे .

ગઝલે મૂસા ૩૮૨

જેસી અબ હે હમે મુશ્કેલ, કભૂ એસી તો નથી;
જેહકી સુરતકો લી એ દિલ, કભૂ એસી તો નથી.
આજકલ વાસ્તે જો હોત આપકે, હોતે હૈં જિદાઈ;
જાત પેહલે તેરી જાહિલ, કભૂ એસી તો નથી.
કત્લ આશકોંકો કિયા, કરતે હો અબ જે તકસીર;
તેગે અબરૂ તેરી કાતિલ, કભૂ એસી તો નથી.
યારકે કરતેહી ગુલશનમેં, નઝારા અબ તો;
આંખ નરગિસકે મુકાબિલ, કભૂ એસી તો નથી.
પડ ગયા અકસ મેરે ગેરતે, ખુરશીદકા અબ;
રોશની માહકો હાસિલ, કભૂ એસી તો નથી.
જંજરે નાલકે મજનૂક, યેહ ક્યા કરતે હૈં શોર;
તેરી શમશીરકી કાતિલ, કભૂ એસી તો નથી.
અબતો હરબાતમેં મૂસાસે, ખફા હોતે હો;
જો તેરી હર શમાયેલ, કભૂ એસી તો નથી.

ગઝલે મૂસા ૩૮૩

બેકલી બાગમે માલી, કભૂ એસી તો નથી;
ખાલી હર ફૂલસે ડાલી, કભૂ એસી તો નથી.
કેહકી શરમ હે, ગુલ્ઝારકી આગે તેરે;
મુંહમેં શીરીં તેરે ગાલી, કભૂ એસી તો નથી.

ज़में हर ज़ख़्ममें, मेहराबकी सूरत है अयाँ ;
तेरी शमशीरे हिलाली, कभू ऐसी तो नथी.
बात करने नहीं देता है, किसी शाइ़रको ;
तब्अ़ उस शूख़की आ़ली, कभू ऐसी तो नथी.
ख़ून किसका किया तूने, सितम ईजाद बता ;
के तेरे चेहरेपे लाली, कभू ऐसी तो नथी.
सुनते है साक़ियेमय कश्का पियाला निकला ;
बोतल ईरजनमें ख़ाली, कभू ऐसी तो नथी.
ख़ून मूसाको दिये क़हरसे, दुन्याने ईरज ;
किसको यह चाहने वाली, कभु ऐसी तो नथी.

ग़ज़ले मूसा ३८४

फ़िदा हूं मैं तुझपर, यही आरज़ू हय ;
जो कुछ आरज़ू है, वोही गुफ़्तगू हय.
सनमसे मुझे बस यही, गुफ़्तगू हय ;
मेरे पास तू है मुझे, जुस्तजू हय.
न जन्नतकी ख़्वाहिश, न दोज़ख़की परवा ;
इ़ज़त हुकम तेरा, मेरी आरज़ू हय.
ज़बांको न ताक़त, क़लमको न क़ुदरत ;
करूं क्या लिखुं क्या, जो है तूही तु हय.
नज़र ऐज ग़रमैसे, मख़्मूर हूं मैं ;

के कूचेमे खुदाली कुलूं, पशीरजूं हय.
कुं मोजमूर नमें महब्बतमें साकी;
न खातिर है मेरी, न शौके सबू हय.
तु कर शुकर मूसाके फरमाने मौला;
अबस दम्न कुमने अमती, फेरा कुरे हय;

गज़ले ज़लीक़ ७८५

तीरे निगाह यारने, मारा मुझे;
अबतो नहीं जीनेका यारा मुझे.
उम्रमें अपनी कभू, ऐ मेहरबां;
याहके ओक दिन न पुकारा मुझे.
हमसे खफ़ा गैरसे हो हम कलाम;
ज़ुल्म नहीं ऐसा गवारा मुझे.
बहरे अलममें तेरे कहांतक रहूं;
पार लगा अबतो खुदारा मुझे.
किससे कहे हाले दिल अपना ज़लीक़;
तुझ सिवा अब कौन है प्यारा मुझे.

गज़ले फ़िराक़ ७८६

चमने हूय बे जना से, सदा आती हय;
नाज़ करती हुई जो बादे, सबा आती हय.
कौन लरता है दमे सहर जो, रातोंको मुदाम;

ठंडी ठंडी तेरे कूचेकी, हवा आती हय.
किसके मैं दस्ते हिनाईका हूं नफ़्सी यारब;
जे हर एक नफ़्ससे फिर मुझे हिना आती हय.
इल्तिज यारकी रख्ता है, सरे शामसे दिल;
रात क्या आती है एक, सरपे बला आती हय.
छोड जाता है जो याद, मुझको अकेला घरमें;
दरो दीवारसे रोनेकी, सदा आती हय.
कूरासे ताज ऊपर, और ऊपरसे तापा;
जैही जल्वाजे हुजे जुन्हे, दोता आती हय.
जमें आता है मसीहासे, मैं पूछूं जाके;
मरने पेश्किकी तुमको, दवा आती हय.
सुब्ह किस्तरहसे होगी शबे तारीके फ़िराक़;
न तो नींद आती है मुझको, न कज़ा आती हय.

ग़ज़ले नासिख़ ३९७

चाक दामन किये जना, तेरे दीवानोंने;
कुदजाने किये आबाद, परेशानोंने.
निमबिस्मिल येह तकईत मुझे, दम आ क़ातिल;
शोर आलममें किया ले, तेरे जलनोंने.
जल्वे उस काकुले मुश्कीसे, शबे तारमें था;

દિલ દિયે ઝુલ્ફે પરેશાંકે પરેશાનોંને.
દૂર ઇન આંખોંકે પુતલોંકા નહો ક્યુંકે લલા;
ઢૂંઢા હૈ આલમમેં આલામેં ભી ઇન્સાનોંને.
મેરે દિલદારપે દિલબર શબે મેહતાબકી રાત;
ગ઼શ કિયે હૂરોં પરી કુદસિયો ગિલ્માનોંને.

ગ઼ઝલે સૌદા-૩૯૮

સાકે સીમીંકો તેરી દેખકે ગોરી ગોરી;
શરમસે શમ્અ હુઈ જલતી હૈ થોડી થોડી.
નયશકરને કહી તુઝ લબસે કિયાથા દાવા;
અબતલક ઉસ્કી જુદા કરતે હૈં પોરી પોરી.
આગયા રાતમેં જૂં દુઝ઼દ હિના તેરે હાથ;
ચરનના પાંઉકો લાગાહીથા ચોરી ચોરી.
અબ્ર બરસે હૈ સિયહ, મસ્તલલા એ સાકી;
દેતું ભરભરકે મુઝે પીઆલિયાં કોરી કોરી.

ગ઼ઝલ-૩૯૯

મરતે દમ ગો જો વહ્ દેખા તુઝે;
એક નઝર દેખા તો ક્યા દેખા તુઝે.
એ પરી તુઝમેં દિવાના ક્યું ન હૂં;
જાન ખોસે જારહા દેખા તુઝે.
ગિરયએ બુલબુલપે ઉસ્ને હસદિયા;

जिसने ऐ गुलगूं क़बा देखा देखा तुझे.
पारे ग़ैरतके न निकले आफ़ताब;
बामपर चढ़ते सनम देखा तुझे.
दीदमें हरचंद है, नुक़साने बदन;
फ़ायदा इतना हुवा देखा तुझे.
मुझे गुलशनकी न लाई ता क़फ़स;
बस हवाहो ऐ सबा देखा तुझे.

ग़ज़ले हकीम. ३९०

ख़फ़ा हमसे वोह सिमबर, होगया हय;
तो खूं ग़मसे दिल और, जिगर होगया हय.
मिले है अब रुक रुकके, वोह मुझसे शायद;
मेरी आहका कम असर, होगया हय.
करे है अब खुल खुल्के, गुलनार ऐसा;
ख़िज़ांसे कहीं बेख़बर, होगया हय.
नरहसे ज़बर, ओ मसीहाके तेरा;
मरीज़ अब चरागे, सहर होगया हय.
कहे कौन तेरा पयाम, आतशीसे;
हकीम उस्से सबको ख़तर होगया हय.

ग़ज़ले मुरसल. ३९१

बेकली ऐसी गयाहै सौंप, वोह गुलरू मुझे;

कल नहीं पडती किसी करवट, किसी पेहलू मुझे.
ज़ख़्म एक शमशीरका साहिबने लगाता है आह;
याद आजाती है जब वोह, लुंखिशे अबरू मुझे.
नालियां हूं जिसके फ़ुरक़तसे, तेरे खुशरंग काह;
अब सजा करे है उस पेहलूसे, इस पेहलू मुझे.
रोते रोते मैं हूं हैरां, येह मुझे क्या होगया;
कुछ नज़र आता नहीं, आंखोंमें एक आंसू मुझे.
जब तलक देखूं न तेरी शक्ल, कल पडती नहीं;
सच जला तूने किया है, यार क्या जादू मुझे.
जातमें मेरीतो अजलके, फ़रक़ कुछ आया नहीं;
क्युं किया चाहता है रुसवा, यार अब हरसू मुझे.
क्या करूं खुरअनत ने उस, सैयाह कातिलकाकिलह;
दामसे छोडाता छोडा, तोडके जालू मुझे.

ग़ज़ले हरूफ़ उपर

अय चर्ख़ मेरे मोतियोंका, हार न टूटे;
सब अश्क मुसलसल रहें, और तार न टूटे.
हम पाके जरहना चले, सेहराके निकलकर;
हर चोब पुकारीके, मेरा ख़ार न टूटे.
सैयादसे बुलबुलने कहा, रोके कफ़समें;
मैं मूर्छ जलासे प येह, गुल्ज़ार न टूटे.

इस रात सुराहीने भी, पैमानेमें हिचकी ;
उठने लगी प्यालेसेति, ख़ुम्मार न टूटे ·
दिल दर्दकी बातें न करो, हमसे ती बनी ;
येह रिश्तये नाज़ुक है, मियां तार न टूटे ·

ग़ज़ले बेक़ · ३९३

सर जयक़ते ज़ख़्म उसक़ातिलके ज़ेरेपाये हय ;
येह नसीब अल्लाहो अक्बर, लोटनेकी जाये हय ·
रेफ़अत ये कहां सुनू ज़ंबरे, दर्दमन्दां ये हय ;
मुज़दह यारे दस्त ज़िर, तलया मेरा ख़ुबसाये हय ·
हाम दर्द ताक़त गई है जो, इसे सीनेमें दम ;
देखिये उसतक ख़ुदा क्युंकर, मुझे पोंहचाये हय ·
याह या रोरे महब्बत, ख़ुबही छडूं नमऊ ;
इश्तुआं मेरा कुमा किस किस मज़ेसे खाये हय ·
न ज़्ज़मेंजी बेक़को तेराही है जसछेन्ते बर ;
बनिजे दर्द देखले है ज़बकु होरा खाबये हय ·

ग़ज़ले छेनरा · ३९४

क़सम न खाइयो बालिम, मैंके पीनेसे ;
वगार न होंगे हम आज़ुर्दह, अपने जीनेसे ·
अगर मैं पाऊं अरेसा, उन्हीं तुझे है हय ;
तो किस मज़ेसे लगालूं, मैं अपने सीनेसे ·

ચમકતે ચાંદકે હૈં ગિર્દ, જિસ્તરહ તારે;
અ઼જબ મઝા હૈ તેરે મુખડેપર પસીનેસે.
વોહ સુનકે અ઼રક઼કો ઈનશાકી, ઈસ્તરહ બોલા;
કિસે ગ઼રઝ઼ હૈ અ઼બસ, મુંહ લગે કમીનેસે.

ગ઼ઝ઼લે અલી નં૯૫

ગુલામ
હમ દિલસે હુએ અહ઼મદ મુખ઼્તારકે બરદે;
લેતેહૈં સિકંદરકે અબ, ઈક઼બાલકો જરદે.
તારીફ઼ લિખી જબકે, ઉસ્નૂરે ખ઼ુદાકી;
યુસુફ઼સે કઈ ઉસ્કે હૈં, દરગાહમેં બરદે.
આયાહું તેરે દરપે, એ મહ઼બૂબ ખ઼ુદાકે;
મુશ્કિલ મેરી હલબહ઼ેર, ખ઼ુદા આપહી કરદે.
તુશાફ઼ીએ ઉમ્મત હૈ, મૈં હૂં આ઼સી જહાંમે;
ઉમ્મીદ તેરેસેહી હૈ, હરકારે યહ઼ર મરદે.
હમ દિલસે હૈં મુશ્તાક઼, તેરે બઝ્મે રિસાલત;
તપસી
પરવા નહીં જન્નતકી હૈ, જ઼હદકો ખ઼બરદે.
હૈ કૌન સિવા તેરે, શફ઼ાઅ઼તસે જહાંકો;
આઝ઼ાદકરે ખ઼તે અમાં, રોઝ઼ે હ઼શરદે;
બસ ફ઼ૈઝ઼ તેરા આ઼મ હૈ, એ સાક઼િએ કૌસર;
એક જામ મહ઼બ્બતકા, તેરે આસીકો ભરદે.
ચહ઼તા હૈ મગર અઈસરે, ઈક઼બાલ અ઼લી તૂ;

સર અપના મહબ્બતસે, ઉસી ઝાડપે ધરદે;

ગ઼ઝ઼લે મુઈ઼નુદ્દીઁન ૩૯૬

રાઝ઼ી હૈં હમ ઉસીમેં, જો કુછ દિલરૂબા કરે;
ચાહે જફ઼ાઓ મેહર કરે, યા વફ઼ા કરે·
દિલસા રફ઼ીક઼ જિસકા જુદા, હોગયા હો યાર;
વોહ અપની બેકસીકો, ન રોવે તો ક્યા કરે·
જિસને હમારે દોસ્તકો, હમસે જુદા કિયા;
વોહભી મુરાદ અપની, ન પાવે ખુદા કરે·
કેહતા મુઈ઼નુદ્દીઁન હૈ તુઝે મેરે દોસ્તાં;
આસાં સભોંકી મુશ્કિલેં, મુશ્કિલ કુશા કરે·

ગ઼ઝ઼લ ૩૯૭

દીવાના કિયા બઝ઼મમેં, રાજ આકે કિસીને;
જહોરા કિયા ચેહરેકો, દિખલાકે કિસીને·
દેખા જો મૈને દસ્ત, કજાઈ નિકલ આઈ;
દી ગાલિયાં લાખોં મુઝે, ઝુંઝલાકે કિસીને·
કુછ દસ્ત દરાઝ઼કા કિયા ક઼સ્દજો મૈને;
ઝટકાદે મેરે હાથકો, શરમાકે કિસીને·
રખ હાથ મેરે સીનેપે, ગુલદસ્ત એ નરગિસ;
મારા મુઝે દીદારસે, તરસાકે કિસીને·
સમઝા મુઝે દીવાનાસા, ઉસ શૂખ઼ને એકબાર;

दिल छिन लिया मुद्दतमें, बहलाके किसीने.

ग़ज़ल. ३९८

मैं वोह नहीं हूं के तुझ बुतसे, दिल मेरा फिर जाय;
फिरूं मैं तुझसे तो मुझसे, मेरा ख़ुदा फिर जाय.
यक़ीन है के पथरको वोह, दिल केजा फिर जाय;
मिसाले बर्क़ी जलवा नुमा, दिल मेरा यहीं फिर जाय.
जिसा ही वोह न फिरे, जिसके ग़ममें मरता हूं;
बलासे हश्रपे गो ज़माने, जहां फिर जाय.
फिरे ज़माना फिरे आसमां, हवा फिर जाय;
बुतोंसे हम ना फिरें, हमसे गर ख़ुदा फिर जाय.
जिगर दिये जो आलोंको, अपने मुखड़े पर;
तो क्या अजब है के आधी कुछ, घटा फिर जाय.

ग़ज़ले सलीमी. ३९९

तुम्हारी ज़ुल्फ़ोंके बेयार, जम अलीसे हय;
जरहसी उम्रमें तरज़, सितम अलीसे हय.
फ़िराक़े यारके क्युंकर, उठायेगा सदमें;
मेरा तो ज़ोफ़से, आंखोमें दम अलीसे हय.
मज़ नहीं के पस अज़, मर्ग ग़मसे दरगुज़र;
बुतोंके इश्ककी हम दम, क़सम अलीसे हय.
सनमके जैसे महफ़िलमें, देखिये क्या हो;

કે શાકલ ઉસ્કીમેં આસારે ગમ, અલીસે હય.
વોહ. શૂખ઼ બનિબે સેહરાસે ભી, ગયાહી નહીં;
કે હસ્ન ગૈરસે બાગ઼ે ઈરમ, અલીસે હય.
અલી તો બેશસે તરફ, પરી હુવાહી નહીં;
કે બાદ રફ઼ીબપે લુત્ફ઼ો કરમ, અલીસે હય.
ફ઼િદા હૈ તુમપે સભીભી તો, બનો દિલસે સનમ;
પર ઉસ્કે સીનેપે દર્દો અલમ, અલીસે હય.

ગ઼ઝલ. ૪૦૦

મુઝકો વોહ નઝર દિખાતા હય;
મેરા યુસુફ઼ કુંએં ઝંકાતા હય.
દિલ્મે કિસ્કી પ્યાસ બુઝતી હય;
ખ઼ંજરે આબદાર લાતા હય.
સાથિ પીના શરાબ લેલીકે;
સાકિ઼યા મુઝકો યાદ આતા હય.
તુર્શરે હોકે મુંહ ફિ઼રાતા હય;
ઝ઼હરે કા઼તિલ મુઝે પિલાતા હય.
શબકો વોહ માહરૂ નહાતા હય;
ચાંદ ગૈરતસે ડૂબ જાતા હય.
દિલ મેરા હૈ મિસાલ શીશેકે;

इस्लिये आड़में मिलाता हुय.
शख़्स महफ़िलका मुझको समझा हुय;
शायद इसवास्ते जलाता हुय.
दीद आलमकी चश्म नहीं रखते;
लनतरानी किसे सुनाता हुय.
नहीं मिलते तो खुश रहो प्यारे;
अंदहली तुमसे हाथ उठाता हुय.

ग़ज़ले सोहा. ४०१

नीमजां हैं येह तेरे चश्मके, बीमार कई;
परगये खंजरे मिझ़गांके, दिल अफ़्गार कई.
कोई ससकता हुय पडा, और है कोई बेहिस;
जान देवे तेरे कूचेके, गिरफ़्तार कई.
इश्क़ही शर्त है क्या, मरजाउं मौत मुझे;
या रब इनसानके मरनेको, है आज़ार कई.
खौफ़ मुझको न डरा, अपनी बडी पगडीसे.
ऐसे मैं देख चुका, गुंबदे दस्तार कई.
तेरे बाज़ारमें अब क्युंके, न बिगडे सोहा;
एक यूसुफ़ नज़र आता है, ख़रीदार कई.

ग़ज़ले हुसैनी ४०२

सरपिंदह ऊपर है, तेरी तस्वीरके आगे;

સુંબુલ હૈ ખિજ઼્લ ઝુલ્ફ઼કી, અંબરકે આગે.
આશિક઼કા તો કુછ બસ નહીં, માશૂક઼કે આગે ;
રાંઝેકા તો કુછ બસ ન ચલા, હીરકે આગે.
બુલવાકે હમેં તેગ઼, નિગહસે હૈ કિયા ક઼ત્લ ;
બનાહી ન થા કાફ઼િર, બે પીરકે આગે.
ઇસ દર્દકી દારૂ નહીં, બિન સબ્ર હુસેની ;
તદબીરકા કુછ બસ નહીં, તક઼દીરકે આગે.

ગ઼ઝલે ફ઼િદા. ૪૦૩

કહી મેરી ગ઼ઝલ હૂ, બયા ન કીજે ;
જિગરમેં આગ લડકાયા ન કીજે.
મૈં કુશ્તા તેગ઼ે અબરૂકા હૂં સાહેબ ;
મુઝે તલવાર દિખલાયા ન કીજે.
યહ કાફ઼િર રહઝની કરતી હૈં આંખેં ;
ઇશારા ઉનકો ફ઼રમાયા ન કીજે.
બિલાયેગા કોઈ અફ઼સૂંકા બીડા ;
લિયા કીજે ચલે આયા ન કીજે.
નઝાતે હુસ્ન બોસાદો ફ઼િદાકો ;
કિસી સાયલકો ઝડકાયા ન કીજે.

ગ઼ઝલે મૂસા. ૪૦૪

દિલસે આશિક઼ હમ કુર્બે હૈં, ઉસ સિતમ ઇજ઼ાદકે ;

जिसपे सौदा दिलहैं, लाखों आशिक़ नाशादहैं.
दरपेसे हर गिरयह ख़ंदह, क़ौलहै उस्तादका;
क्युं न हम क़ुरबां हों, अपनी साअ़ते मिलादहै.
जामपर नश्वह दिखाकर, करदिया बेहोश हाय;
किसतरह आमादः होते, न साक़ी ख़ुरयादहै.
चश्मे बीना देख उसको, याबेना बीना हुवे;
हमसे या रब बख़्त बेहतर, कोरे मादरज़ादहै.
किसको ख़्वाहिश और तमन्ना, है बमाले हूरकी;
दिलसे हम हैं कुश्तए अंदाज़े, आदमज़ादहै.
सोज़े दिलसे गरमें जेयूं, नालए आतश फ़ुरीं;
मोम होजाये अली दौरन, क़फ़स फ़ौलादहै.
क्युं न मूसा नश्वहगार हो, नश्वए ऐशो निशात;
येह यह करती है बुलबुल, गुल्शने दिल शादहै.

ग़ज़ले मूसा. ४०५

ऐक आलम देख तुझको दंग हय;
हुस्न तेरा नश्वए नैरंग हय
ऐक ल है नश्वए, नाले नियाज़;
हुस्नमे और इश्क़में अज जंग हय.
है मेरी जामहको शोरे मरहबा;

हज्जल तहरीरे पुरी आहंग हय·
क्या असर है आहे आतशीबारका ;
रातका अब दिनने बदला रंग हय·
है नजर उस यारकी तस्वीरके ;
आईनेका सामने जस, नक्शमे अरजंग हय·
गर नहीं है तंग उसका कूचे यह ;
पर तसव्वुरमें दिल अपना तंग हय·
बखुदागर आंखोंमें मूसाके मुदाम ;
बख्त हमारा आलमें बेरंग हय·

गजले अली·४०५

बिजरीले अभी बिरकी, सदा खाके कदमले ;
करता था अबजकोहले, असर अरशीपे दमले·
नाम उसका लिखा हकने, पिला नामसे अपने ;
नोह पायसे अईलाकपे, छेवलका कलमले·
किसशानसे आयेगी, मोहम्मदकी सवारी ;
अरसालसे बन्नमें सती, कैने उपमले·
कदवीके तेरे आतशी, दोजखसे नडर हय ;
गर किस्वरे हस्तीसे गया, राह अदमले·
साबित किया मोअज्जमने, तेरे कैनका दावया ;
छिनकारपे कुईारके, छेकार सनमले·

હમસર ન તેરે હુસ્નકે હૈ, યુસુફ઼ે કિન્આં;
બેચા હૈ જિસે મિસ્રમેં, માલિકને દિરમસે.
આતી હૈ અ઼જબ ફૈ઼ઝે, મલક અ઼રશી બરીસે;
બસ તો હૈ યે સ઼લ્વાત સદા, સૂએ હ઼રમસે.
એ સાક઼િયે કૌસર હૈ તેરા, ફૈ઼ઝ અ઼જબ આમ;
મૈં અપની મહબ્બતકી, પિયાલેમેં કરમસે.
મહબૂબે ખુદા ઔર ન, મોહમ્મદકે સિવા હય;
ઇસ બાતકી અબ મુઝસે, ખુદાએકી ક઼સમસે.
કરતે હૈં મલક ફ઼ખ઼ર સદા, અપને પરો બાલ;
જિસ રાહમેં ચલતી હૈ, તેરી ફૈ઼ઝ અ઼લમસે.
મહફ઼ૂઝ મન રેહ બએ, દરે ફૈ઼ઝ નબીસે;
ક્યા ફ઼િકરમેં બૈઠા હૈ અલી, ગોરીબ઼ે ગ઼મસે.

ગ઼ઝલે મૂસા-૪૦૭

ગુલ ગએ ગુલશનસે બાક઼િન ખાર બાક઼ી રેહ ગએ;
ગુમ ફ઼સ્લે હો ગએ પરમાર બાક઼ી રેહ ગએ.
દોર આખ઼િર હૈ દિલા, હુશ્યાર રેહના ચાહિયે;
ચાહ દિલસે હઝ઼ હુએ, ગોયાર બાક઼ી રેહ ગએ.
દોડતે હૈં ઇન દીનો કાગ઼ઝકે ઘોડે ચારસૂ;
માલ શાહોંકા હુએ અખ઼બાર, બાક઼ી રેહ ગએ.

तीरे नज़रेसे दिल ब्नुं आनमे मंजूर हय ;
नब्ज़ अछे होगअे सूइार बाक़ी रेह गअे ·
दरदो सौदा लेके छलिशा भीरो मिरब़ ओर नज़र ;
सजगअे मूसायते अश्आर बाक़ी रेह गअे ·

गज़लोपूरी·

मुस्तज़ादे हुसैन · १

सोता है गले लगके यांह, बजयार पलंगपर ;
क्या नाज़ अदासे ·
आती है नपर फूलोंकी महकार पलंगपर ;
उसबदनके इबासे ·
है सुरख़ ले पोशाक तो, उसगोरे बदनपर ;
सजती है सबपर ·
रखता है अजब तरहका, गुलज़ार पलंगपर ;
अंचलकी निलासे ·
साक़ी तेरे सदक़े तुबराबमको लरदे ;
ले शीशे फ़ुदा हो ·
ले साथ रहूं यारके सरशार पलंगपर ;
सरमस्ते निशासे ·

है आरज़ू दिलकी योहमे, आगोशमें आवे ;
ज़ाहिर है मेरी येह.
सोज़ तो होजउ मैं , जलहार पलंगपर ;
मिन्नत येह खुदासे.
रंगीनी तेरे शेअरकी, सुनसुनके हुसैनी ;
अब मुश्ताक़ हुवा दिल ;
तुखुशी रहे और पास रहो, दिलदार पलंगपर ;
हर रोज़ रबसे.

मुस्तज़ादे अकबर. २

इस इश्क़ने यारोमुझे, दुन्यासे उठाया ;
दीवाना बनाके.
जुल्फ़ोंमे परीरूके गिरफ़्तार फिराया ;
फिर शाना बनाके.
फिर शौक़के शीशेमें शराब इश्क़ अपनी,
भरभरके पिलाया.
फिर मेरा तमाशा सारे आलमको दिखाया,
अफ़साना बनाके.
येह दुख़्तरे रज़ लगती है, हर शेख़के मुंहसे ;
अई सोरसमें साक़ी.

ક્યા નામ રખા તેરા યેહ, ક્યા તૂને પિલાયા
મૈખ઼ાના બનાકે.

જે દિલ ક઼િયા દિલબરને, અજસલેકે મેરા દિલ;
ક઼િસમ કરો હુનરસે.

ફ઼િર અપને લગા કાનકે, આલેમેં ગુડાયા;
કુરઘાના બનાકે.

નજ઼દીક રક઼ીબોંકે સ઼નમ રાતકો બેઠા;
મજલિસ ક઼િયા રોશન.

ફ઼િર અપને શમ્અકે ઉપર હમકો જલાયા;
પરવાના બનાકે.

ગૈરોંકો બુલાકર વોહ, લગા પાસ બિઠાને,
મુદ્દતકે ગોયા દોસ્ત.

હમ દોસ્તે યેગાનાકે, તર્ધે દૂર બિઠાયા,
બેગાના બનાકે.

અકબરકી યહી અર્ઝ઼ હૈ અબ હક઼સે શબોરોજ઼
અપના તૂ તાલેબ.

દુન્યામેં અગર રખના હો તો રખલે ખુદાયા,
મરદાના બનાકે.

मुस्तज़ादे मौलाना उ

मैंने जबतक तो तेरा इश्क़ निबाहा आहा,
जाके सो तरह का ग़म.
पर अफ़सोस तूने मुझे न चाहा आहा
जानिये ज़ुल्मो सितम.
फ़ुरक़ते शबको ये क़ायक मैं कहूं क्या तुमसे,
तेरे बिन गुज़रा जो कुछ.
दिले पुर दर्द ये हक़ पेहलूमें कराहा आहा,
याद कर तुझको सनम.
क़ायरिस जायके तुम रैन रहेहो पीतम,
आय कीरपा करोजी.
जतौहे जन मेरी विन्तीकर आहा आहा,
पाप होजाये धरम.
सानू घायल किती तक़सीर करीथी रेंडी,
मेंडी तो जन लेंडी.
छिंदरी जहां तेरी तिरछी निगाहा आहा,
कुछ नहीं तीरसे कम
ऐसी क़ायम्यूं ग़ाली सांगजरा मन पासन,
प्यू तुसा अन्नायीआन.
जनो पनघोगा दिलसे ज़ार आहा आहा,

यारनपर छैलड़ा जुलम·

अरदी अरदी और फुदी और तुर्छ,

पीये दिर्छ हाजिल दिर्छे·

वीयहू माअशूई पाशा यिस्तहु अघाहा आहा,

कुछ नही जेशो नडम·

ज्युरी ज्युरी येरी हॅन्ड सम लिरलू येर हियर,

डिसगिय माई डियर·

ऑन्डगो अेनी येर युइंरा आहाहा अहा

माई होस अेपरीडे डम·

वकुले मस्ती योडरीहिम तुरा दरजरे जेशा,

हमयो उम्मीदे विसाल·

दीदहू अमअनतो सनमयंह अहाहा आहा·

कुरूतअे नाने तोअम·

सरई तुल उम्र झिले हिजर लेडाया सनमी,

सुम्मा जिल्लाहे उमन··

ईआहा सुम्मा आहा सुम्मा आहाहा आहा,

ले साड़ी मिरजे सनम-

हेई सहहेई हे अईसोस रवद अईसोस सनम,

आया पयगामे अजल·

छुरगया नफ्मे जगरसे मेरे हाहा आहा,

अब निकल अवेगा हम.
है पोशनब तेरे सजरीसे मुसल्सल मोबूं,
राकु नहीं घरमे बरा.
येह ग़ज़ल जिसने सुनी उसने सराहा आहा,
ताज़ह तर ताज़ार कम.

रेख़्तो धनशानो १

चुलती है येह तो निगोडी मुझे लारी अंगया;
कोई सारीसी मेरे वास्ते लारी अंगया.
गोखड़े जहर जुनत डांक सलारे क्या चीज़;
उससे होजती है कमबख़्त गंवारी अंगया.
जीजी पुगलानी ने सीसाकेथी आई न पसंद;
जेगमालने थोह सर उनकेसे मारी अंगया.
ढींगा मस्ती अब अब किससे कुछ येह तो कहो;
इरगई आपकी सारीकी सारी अंगया.
थी अजब कोई सुघड जिसने येह काडी जूरी;
या छडी जनाई अेक फूलोंकी कियारी अंगया.
हाथ धनशाका कहीं छू जो गया तो बोली;
तेरा मकदूरके तू छेडे हमारी अंगया.

रेख़्तो रंगीननो २

मैं पोहतो ओड़हनेकी नहीं कुलकी ओरहनी ;
माळ मुझे मंगादे असा जलकी ओरहनी·
बरसात जिसको कहते हैं ओ उस बहारमें ;
सरपर हयाके होती है बादलकी ओरहनी·
गरमीके मारे नाकमें आयी है मेरी जान ;
लेहकरके पियारीमें अंचलकी ओरहनी·
आयी लपेटकपरमें मेरे लोगो दोड़यो ;
घुरने तलक तो सरसे मेरे हलकी ओरहनी·
लाखी निपर मंगादे के रंगी लगाउं मैं
नै ठैरती है सरपे मेरे हलकी ओरहनी·

बेत यकानी १

दिल पयचलायगा ओ बुत मेरे तरसानेसे ;
उठके काफ़ले को यसा लगेगा बुतखानेसे·

मजमुए अशआरनो
त्रीजो आलम पूरो·

આ મજમ ઉલ અશઆરના ત્રીજા વાલમની કિતાબ ઘણી સારી રીતે સુધારીને લખી છે તોપણ કોઈ ઠેકાણે કાંઈ ચૂક રહેલી નજર આવે તો તે શાણાં વાંચનારાઓ સુધારી વાંચીને માફ કરશે એવી આશા છે.

લા. મેહતાજી ચુનીલાલ મંછારામની દુવાસલામ વાંચજો. આજની મીતી સંવત ૧૯૩૯ના ફાગણ સુદ ૨ને વાર સોમે તારીખ ૨૦મી ફેબ્રુઆરી સન ૧૮૮૨ઈ

આ મજમ ઉલ અશઆરનાં વાલમ - ૧ - ૨ - ૩ તથા ઘણી જાતના મુસલમાની કિસ્સા ગુજરાતી હરફમાં સુધારીને છપાવેલા શ્રી મુંબઈ મધ્યે બાહારકોટ ભીંડી બજારમધ્યે નવાબની મસીદ સામે મુલ્લાં નૂરૂદીન બિન જીવાભાઈની દુકાને તથા શેઠ ઈસુફ અલી બિન કરીમજીની દુકાનેથી વેચાથી મળશે - તથા પાયધોણી નાકે બંગાળાની સામે શ્રી પોરબંદરના કાજી ફતેહમાહમ્મદ બિન કાજી નુરમાહમ્મદ સાહેબની દુકાને વેચાથી મળશે.
